thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 30 नवम्बर 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 30 नवम्बर 2014 से 06 दिसम्बर 2014

मा.शु. 9 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 133, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. सफिलगुड़ा (हैदराबाद) में हुआ यज्ञमहोत्सव आयोजित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा तेलंगाना के तत्वावधान में महात्मा हंसराज जी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में डी.ए.वी. सफिलगुड़ा (हैदराबाद) के प्रांगण में यज्ञमहोत्सव श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया गया। इस कार्यक्रम में 51 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य यजमान तथा मुख्य अतिथि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी, उप प्रधान श्री प्रबोध महाजन जी (सपनीक), सचिव श्री एस. के शर्मा जी, निर्देशक पी.एस.–1 श्री जे.पी.शूर जी थे। तेलंगाना क्षेत्र की विभिन्न आर्य समाजों के सदस्यों, दक्षिणी क्षेत्र के डी.ए.वी. स्कूलों के प्राचार्यों एवं शिक्षकों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लेकर स्वयं को लाभान्वित किया। यज्ञ के ब्रह्मत्व का कार्य उपदेशक महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) के प्राचार्य श्री प्रमोद आर्य जी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ''आओ संसार सुखमय बनाएँ'' था। इस अवसर पर आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी ने तेलंगाना में इस प्रकार पहली बार मनाए जाने वाले भव्य आयोजन पर हार्दिक बधाई दी। मुख्य अतिथि द्वारा आर्य विद्वानों एवं सन्यासियों का सम्मान भी किया गया। तेलंगाना क्षेत्र में डी.ए.वी. विद्यालयों में अध्यापन के 25 वर्ष पूरे करने वाले प्राचार्यों एवं शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। सेवा प्रकल्प कार्यक्रम के अंतर्गत माननीय प्रधान जी ने कई संस्थाओं को सिलाई मशीन भी प्रदान की।

प्रधान जी ने 'ओ३म्' विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव........'मन्त्र' का अर्थ समझाते हुए सभाजनों को अपने मन को साफ कर अच्छाइयों को धारण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने सुखी संसार के सरल साधन चार (स) अर्थात् संध्या, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा का महत्व समझाया तथा इनके द्वारा सत् चित् आनंद प्राप्त करने की ओर अग्रसर किया। आर्य समाज सदैव सेवा एवं त्याग की विचारधारा को बढ़ावा देता रहा है। डी.ए.वी. संस्थाएँ इसी विचारधारा के अनुसार कार्य करती हैं। महात्मा हंसराज जी के 150वें जन्म के उपलक्ष्य में 5 से 11 नवम्बर2014 तक देश की सभी डी.ए.वी. संस्थाओं में चलने वाले रक्तदान शिविर का शुभारम्भ कर 'रक्तदान महादान' उक्ति को चरितार्थ करने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

आ. प्रा. प्र. उपसभा तेलंगाना की प्रधान एवं क्षेत्र निर्देशिका श्रीमती सीता किरण जी ने अतिथियों का स्वागत कर क्षेत्र की डी.ए.वी. संस्थाओं के कार्यों की झलक प्रस्तुत की। सभा के सचिव श्री एस.के.शर्मा जी ने माननीय सूरी जी के नेतृत्व में सभा में होने वाले कार्यों से लोगों को अवगत कराया। निदेशक पी. एस.–1 श्री जे.पी. शूर जी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी के नेतृत्व में आर्य समाज एवं डी.ए.वी. संस्थाओं की उन्नति का विश्वास दिलाया। शांति पाठ द्वारा यज्ञमहोत्सव का समापन किया गया।

बी.बी. के. डी.ए.वी. कॉलेज द्वारा आर्य समाज लोहगढ़ में वैदिक हवन-यज्ञ का आयोजन

बी बी के डी.ए.वी. फॉर विमेन, अमृतसर की आर्य युवती सभा की ओर से त्याग एवं सादगी की प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज की स्मृति ऐतिहासिक आर्यसमाज लोहगढ़ में 'वैदिक हवन यज्ञ' का आयोजन किया गया। जिसमें प्रो. (डॉ.) दलबीर सिंह (संस्कृत विभाग गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर) मुख्यातिथि के रूप में पधारे। कॉलेज प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) नीलम कामरा ने आए हुए अतिथियों का भव्य स्वागत किया और कहा कि ''सभी डी.ए.वी. संस्थाएँ यही प्रयास करती हैं कि इनके छात्र–छात्राएँ वैदिक–मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों से जुड़–कर तथा महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर चलकर आर्य (श्रेष्ठ) बनें और अपने राष्ट्र का, समाज का कल्याण करें। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित 'यूथ फेस्टीवल' में जोनल चैम्पियनशिप ट्रॉफी और इंटर जोनल रनर्स अप ट्रॉफी जीतने पर प्राध्यापकवर्ग और लगनशील छात्राओं को बधाई दी।'' श्री सुदर्शन कपूर जी (अध्यक्ष, स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति) ने उपस्थिति का हार्दिक धन्यवाद किया और कहा कि 'गायत्री महामंत्र' के उच्चारण से अनेकों कष्ट दूर हो जाते हैं।

मुख्यातिथि प्रो.दलबीर सिंह जी ने स्वामी दयानन्द के समर्पित जीवन और वेदों की महिमा बताते हुए कहा कि महर्षि ने वैदिक संस्कृति से भारतीय समाज को पुनः परिचित करवाकर जागृत किया और नारी को शिक्षा का अधिकार, स्त्री–पुरुष व सभी वर्गों को समानता का अधिकार दिया।

श्री जे.के.लुथरा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वैदिक आदर्श सत्य को ग्रहण करने वाला व्यक्ति कभी विफल नहीं हो सकता। डॉ. वी.पी. लखनपाल ने छात्र–छात्राओं को स्वस्थ भोजन, योगाभ्यास, अनुशासन, अन्यों की सेवा, सिमरन, स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया। कॉलेज के संगीत विभाग के प्रो. विजय महक और छात्रा सुश्री रीचा ने उपस्थित को मधुर भजन सुनाकर आनन्द विभोर कर दिया। इस स्वर्णिम अवसर पर कॉलेज द्वारा नवम्बर माह में जन्में छात्र–छात्राओं को उपहार भी दिए गए। इस पावन यज्ञ मे अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 30 नवम्बर, 2014 से 06 दिसम्बर, 2014

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति चिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अङ्ग)** हे, **(अमूर)** अमूढ़, **(चिकित्वः)** ज्ञानी, **(अग्ने)** परमेश्वर!, **(मूराः)** मूढ़, **(वयं)** हम, **(महित्वं)** महत्ता को, **(न)** नहीं [जान पाते]।, **(त्वं)** तू, **(वित्से)** जानता है। [हमारा], **(वव्रिः)** रूपवान् आत्मा, **(शये)** सोया पड़ा है, **(जिह्वया)** जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, **(अदन्)** भोग करता हुआ, **(चरति)** विचरता है, **(विश्पतिः सन्)** राजा होता हुआ [भी], **(युवतिं)** प्रकृति–रूप युवति को, **(रेरिह्यते)** अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनााया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में महात्मा आनंद स्वामी जी द्वारा लिखी गयी 'दो रास्ते' नामक कथा समाप्त हुई जिसमें उन्होंने मनुष्य के सामने आए दो रास्तों का वर्णन किया है। एक दुनिया का, दूसरा दीन (धर्म) का कठोपनिषद् के अनुसार इन दोनों मार्गों को प्रेयमार्ग और श्रेयमार्ग कहा।

पाठकों के आग्रह पर स्वामी जी की एक अन्य कथा प्रस्तुत की जा रही है– 'एक ही रास्ता'। मनुष्य को अपने जीवन में धन, शक्ति, शासन, संतान, मकान, महल और भूषण आदि अनेक आनन्द मिलते हैं, परंतु क्या वास्तविक आनन्द मिलता है। आनन्द का वास्तविक स्रोत तो ईश्वर है। उसको समझे और उसके निकट जाए बिना वास्तविक आनन्द न आज तक किसी को प्राप्त हुआ, न कभी होगा। और, ये प्राप्त होता है–ज्ञान, उपासना और सत्संग से। आइए, महात्मा आनन्द स्वामी की अमृतवाणी का नये प्रकार से आनन्द लें।

अब आगे.....

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।। सामवेद
उ.4 ।2 ।1 3 ।2 ।।

मेरी प्यारी माताओ और सज्जनो!

जैसा कि आपको अभी बताया गया है, जिस विषय के सम्बन्ध में मुझे कथा करनी है वह 'एक ही रास्ता'। प्रातः–काल मैंने जब समाचारपत्रों को देखा और फिर शहर की दीवारों को देखा तो वहाँ कितनी ही जगहों पर लिखा पाया–

'एक ही रास्ता' मैंने समझा–करोलबाग आर्यसमाज ने बहुत रुपया बिना कारण ही खर्च कर दिया। कथा का विषय बताने के लिए इतने बड़े–बड़े विज्ञापन किसलिए दिए? परन्तु बाद में पता चला कि वह कथा का विज्ञापन नहीं, किसी फिल्म का नाम है 'एक ही रास्ता', इसकी चर्चा उन विज्ञापनों में है। अब एक रास्ता वहाँ है, एक यहाँ। कौन–सा रास्ता ठीक है, वह हमें देखना है। परन्तु वहाँ और यहाँ का अन्तर हो तो हो, रास्ता तो एक ही है, दूसरा नहीं; और यह वह रास्ता है जिसे हमारे देश की सरकार ने अपना आदर्श बनाया, जिसका वर्णन वेद, उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थ करते हैं। भारत सरकार का आदर्श है–

सत्यमेव जयते

'सदा सत्य की जय होती है।' और वेद, उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं–

असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

शतपथ 14 ।4 ।1 ।30 ।।

'असत्य से सत्य की ओर ले चल; अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चल; मृत्यु न दे, अमृत दे हमको।' परन्तु यह मृत्यु, जिससे हम बचना चाहते हैं, क्या है? प्रत्येक वस्तु जो उत्पन्न होती है, वह अवश्य नष्ट होती है। आपके लिए मृत्यु नहीं है, इसलिए इस मृत्यु का, जिसे हम मृत्यु कहते हैं, इसमें वर्णन नहीं है। मृत्यु का वास्तविक अर्थ है दुःख, कष्ट, क्लेश, बीमारी, गरीबी, भूख, व्यभिचार, दुराचार, अत्याचार, पर तन्त्रता, भीरुता, कमजोरी, हार, घूस, ब्लैकमार्केट और इस प्रकार की दूसरी सब बातें, और अमृत का अर्थ है वे सभी वस्तुएँ जो अच्छी हैं। भक्त इच्छित वस्तुओं की इच्छा से और बुरी बातों से बचने के लिए प्रार्थना करता है तो कहता है–''मृत्यु न दे, अमृत दे।'' इसी प्रकार अन्धकार के बदले वह ज्योति माँगता है। अभी हम यहाँ आए तो अँधेरा था। पता लगा कि बिजली का तार जल गया है। सब लोग चिन्ता में थे। तार लग गया, रोशनी आ गई तो सबके हृदयों में

thearyasamaj.org

प्रसन्नता आ गई। झूठ अन्धकार भी है, मृत्यु भी। सत्य रोशनी भी है, अमृत भी। इसी की हम इच्छा करते हैं। इस इच्छा के पूरे होने का एक रास्ता है। इस रास्ते को मुझे आपके सामने रखना है। आनेवाले सात दिनों में आप बार–बार इस 'एक ही रास्ता' का वर्णन सुनोगे।

संसार आज विनाश की ओर जा रहा है। एक से एक बढ़कर ऐसे हथियार बनते हैं जो अधिक–से अधिक विनाश कर दें। चिल्लाते हुए लोग दौड़े जाते हैं–'बचाओ–बचाओ!'

दुनिया का प्रत्येक दार्शनिक, विचारक, राजनीतिज्ञ, विद्वान और नेता इस चिन्ता में है संसार को विनाश से कैसे बचाया जाए? प्रत्येक शासन, प्रत्येक शक्ति कहती है–शान्ति चाहिए।

मन–ही–मन में चाहे वह और योजनाएँ बनाता हो, बाहर से प्रत्येक व्यक्ति शान्ति की बात करता है, अन्दर कुछ और। इसलिए विनाश से बचने की जितनी बात ये करते हैं, विनाश का अन्धकार उतना ही समीप आता जाता है। इनके अन्दर स्पष्ट नहीं है, इसलिए अमृत नहीं है, ज्योति नहीं है। वेद भगवान् सत्य कहते हैं–

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

'जो आत्मा को देनेवाला परम सत्य है, जिसकी छाया अमृत है, जिसकी उपासना करना ही सबसे बड़ा काम है' उसी से दुनिया परे हट गई है। अविश्वास की अग्नि जल उठी है, ज्वालाएँ धधक रहीं हैं। कुछ पता नहीं कि इस धधकते हुए, उबलते हुए, उछलते हुए अग्नि–सागर में सारा संसार कब कूद पड़े। मानवता जल जाए, महानाश जाग उठे। इस दशा को देखकर लोग चिल्ला उठते हैं। जिन्हें ज्योति और अमृत प्रिय है वे चिल्लाकर पूछते हैं–क्या मानवता को बचाने का कोई उपाय नहीं? क्या संसार के कल्याण का दिवाला निकल गया? समाप्त हो गया सब–कुछ? क्या अब कोई आशा नहीं?''

इस दशा को देखकर मुझे एक पुरानी कथा याद आती है। आयुर्वेद शास्त्र के महान् ग्रन्थ 'चरक' को लिखने वाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रन्थ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में जा रहे थे। घने जंगल की पगडण्डी पर वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश।

एकदम महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गए। आकाश की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी साँस लेकर बोले–''महानाश आनेवाला है।

अग्निवेश ने पूछा– ''कैसा महानाश, गुरुदेव?''

पुनर्वसु बोले– ''मैं देखता हूँ कि जल बिगड़ रहा है, पृथिवी बिगड़ रही है। वायु, तारे, आकाश, सूर्य चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा। औषधियाँ अपना प्रभाव छोड़ देंगी! पृथिवी पर टूटते हुए तारे गिरेंगे! विनाश करने वाली आँधिया चलेंगी! विनाशकारी भूकम्प उठेंगे! बड़े–बड़े बम गिरेंगे! महानाश का महाताण्डव जाग उठेगा! मनुष्य बचेगा नहीं, बचेगा नहीं!''

यह कथा 'चरक' के विमान स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्निवेश ने जब यह भयानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा– ''गुरुदेव! आप यह भयभीत करने वाली भविष्यवाणी क्यों कर रहे हैं? सब रोग का सामना कर सके, ऐसा ग्रन्थ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आएगा तो क्यों?

महर्षि पुनर्वसु ने कहा– ''इसलिए आएगा कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म की ओर चल पड़ेंगे –सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में उनकी रुचि न रहेगी।''

अग्निवेश ने पूछा–''धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का क्या कारण होगा, गुरुदेव?''

गुरुदेव बोले–''बुद्धि का बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब वह सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है, तब धर्म में रुचि नही रहती।'' यह है इस आनेवाले महानाश का कारण। 'चरक' में केवल रोग ही नहीं बताए गए हैं, इनकी चिकित्सा भी बताई गई है। अग्निवेश ने जब यह पूछा कि महानाश के रोग का कारण क्या होगा तो महर्षि पुनर्वसु ने स्पष्ट और सीधे शब्दों में कारण भी बता दिया। रोग को कोई नहीं चाहता, परन्तु कारण उत्पन्न हो जाए तो रोग अवश्य पैदा होता है। क्यों जी करोलबाग में रहनेवालो! क्या आपमें से कोई चाहता था कि आपको पीलिया की बीमारी हो जाए? कोई नहीं चाहता था। फिर भी जब कारण पैदा हुआ तो पीलिया जाग उठा। कितने ही घरों में हाहाकार जाग उठा। बुद्धि के बिगड़ जाने से सर्व प्रकार के विनाश उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए चरक ने कहा–

प्रज्ञापराधो मूलं सर्वरोगाणाम्।

'बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है।' परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवल शारीरिक रोग पैदा नहीं होते; सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आत्मिक सभी रोग पैदा होते हैं। इसलिए कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, तब बुद्धि उलटे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी कहा–

बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।। गीता २। ६३।।

'बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।' महाभारत के उद्योगपर्व में आता है कि जब देवता किसी की रक्षा करना चाहते हैं या किसी का नाश करना चाहते हैं तो क्या करते हैं? स्पष्ट वर्णन है कि जब वे नष्ट करना चाहते हैं तो उसके लिए विष नहीं भेजते, तलवारें नहीं बनाते, किसी को यह नहीं कहते कि जाकर अमुक व्यक्ति को नष्ट कर आओ। केवल एक बात करते हैं और वह यह कि उसकी बुद्धि बिगाड़ देते हैं। तब वह स्वयं ही ऐसे रास्ते पर चल पड़ता है, जो विनाश का रास्ता है; और जब वे किसी की रक्षा करना चाहते हैं, तब उसके लिए अंग–रक्षक नहीं भेजते। किसी को यह नहीं कहते कि जाओ, इसकी रक्षा करो, अपितु उसकी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा करते हैं कि वह स्वयं ही रक्षा के मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं ही उसकी रक्षा होती है।

'बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठता है।' महाभारत के उद्योगपर्व में आता है कि जब देवता किसी की रक्षा करना चाहते हैं या किसी का नाश करना चाहते हैं तो क्या करते हैं? स्पष्ट वर्णन है कि जब वे नष्ट करना चाहते हैं तो उसके लिए विष नहीं भेजते, तलवारें नहीं बनाते, किसी को यह नहीं कहते कि जाकर अमुक व्यक्ति को नष्ट कर आओ। केवल एक बात करते हैं और वह यह कि उसकी बुद्धि बिगाड़ देते हैं। तब वह स्वयं ही ऐसे रास्ते पर चल पड़ता है, जो विनाश का रास्ता है; और जब वे किसी की रक्षा करना चाहते हैं, तब उसके लिए अंग–रक्षक नहीं भेजते। किसी को यह नहीं कहते कि जाओ, इसकी रक्षा करो, अपितु उसकी बुद्धि को ऐसी प्रेरणा करते हैं कि वह स्वयं ही रक्षा के मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं ही उसकी रक्षा होती है।

चाणक्य ने भी कहा है– "ऐ भगवान्! यदि मेरे बुरे कर्मो के कारण मेरा सब–कुछ छिन जाए–धन दौलत, जमीन, परिवार, सुख और सौभाग्य; सबका अन्त हो जाए, मेरे शरीर का एक–एक अङ्ग ले ले, केवल एक वस्तु रहने दे मेरे पास, मेरी बुद्धि।"

और वेद भगवान् भी यही कहता है। सामवेद के १०१ वें मन्त्र में भक्ति का वर्णन किया, फिर कहा है कि भक्ति करते–करते इसके सफल होने पर त्याग–अभ्यास के बाद जब भगवान् सामने आ जाएँ तो उससे क्या माँगें ?

करोलबाग के किसी सज्जन के सामने भगवान् आ जाएँ और कहें–माँग, क्या माँगता है ? तो वह कदाचित् कहे कि मकानों के किराएँ कम हो जाएँ, गलियाँ चौड़ी हो जाएँ। माताएँ शायद कहें कि दुपट्टे सस्ते हो जाएँ, कॉलिजों और स्कूलों में बच्चों की फ़ीस कम हो जाएँ। परन्तु सामवेद का यह मन्त्र कहता है–बेकार हैं ये वस्तुएँ। इन्हें माँगने का कोई लाभ नहीं। धन, दौलत, परिवार माँगने का लाभ नहीं। तब क्या माँगो ? मन्त्र पुकारकर कहते हैं–

जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये।
अयं ध्रुव रर्याणां चिकेतदा।। –सा.1 01

'जब ज्योति जाग उठे; अष्टांग योग की सात सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद, सात यात्राओं को पूरा करने के पश्चात्–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान के बाद जब समाधि अवस्था में पहुँच जाओ, तब एक महान् ज्योति प्रकट होती है।' सात सीढ़ियों के बाद वह मनमोहन प्रियतम सामने आकर कहता है– अरे, मैं तो प्रकट हो गया, तेरे समक्ष आ गया, माँग क्या माँगता है? क्या चाहता है तू? उस समय अपने जीवन को सुधारने के लिए, लोक और परलोक को सुधारने के लिए, उस महाज्योति और महाशक्ति से 'मेधा' को माँगो। मेधा उस बुद्धि को कहते हैं जो भूलती नहीं, जिसमें आई बात फिर कहीं जाती नहीं।

कई लोग इस भूलने के रोग से छुटकारा पाने के लिए ब्राह्मी बूटी का प्रयोग करते हैं। कई लोग मकरध्वज खाते हैं। कई लोग दूसरी ओषधियाँ प्रयोग करते हैं। एक माँ की बात मुझे याद आती है। मैं उसके घर गया था। बहुत दुःखी थी वह। पूछा–"क्यों दुःखी है?" बोली–"मुझे कुछ भी याद नहीं रहता। बाहर से अन्दर आती हूँ वस्तु लेने के लिए, अन्दर आते–आते यही भूल जाती हूँ कि क्या लेने आई थी।" इस मन्त्र में उसी बुद्धि को माँगने की बात कही गई है जो भूलती नहीं।

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

ईश्वर, सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में

● ओम प्रकाश आर्य

ईश्वर एक ऐसा विषय है जिस पर अनेकशः मतभेद हैं। कुछ लोग उसे चौथे आसमान पर, कुछ सातवें आसमान पर, कुछ एकान्त देश में मानते हैं तो कुछ लोग ईश्वर की सत्ता स्वीकार ही नहीं करते। कुछ कण-कण में सर्वव्यापक तो कुछ स्थान विशेष पर मानते हैं। इन समस्त विचार धाराओं में जो वैज्ञानिक विचार धारा है वह सर्वोपरि है क्योंकि विज्ञान के सिद्धान्त अकाट्य हैं, तार्किक हैं और सर्वमान्य हैं। वैज्ञानिक ईश्वर को किस रुप में स्वीकार करते हैं। आइए विश्व के कुछ सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के ईश्वर सम्बन्धी दृष्टिकोण को देखें।

1. वैज्ञानिक का नाम-फ्रेंक ऐलन, जीवभौतिकविद्। जीव भौतिकी प्रोफेसर मानिटोबा (कनाडा) विश्वविद्यालय (1904-1944): इस वैज्ञानिक के लेख का कुछ अंश- "यदि हमारी पृथ्वी का आकार सूरज जितना बड़ा हो जाए, किन्तु उसकी घनता ज्यों की त्यों कायम रहे तो उसकी गुरुता 150 गुनी बढ़ जाएगी, वायुमंडल की ऊँचाई घटकर केवल चार मील रह जाएगी, पानी का भाप बनकर उड़ना असंभव हो जाएगा और वायु का दबाव प्रति इंच एक टन से अधिक बढ़ जाएगा। एक पौण्ड के प्राणी का वजन तब होगा 150 पौण्ड और मानवों का आकार घटकर इतना छोटा हो जाएगा जैसे गिलहरी। ऐसे में बौद्धिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि पृथ्वी का आकार चन्द्रमा जितना कर दिया जाए तो गुरुत्वाकर्षण की शक्ति न वायुमंडल को सँभाल सकेगी, न ही पानी और तापमान भी इतना सीमातीत होगा कि जीवन धारण करना कठिन हो जाएगा। यदि पृथ्वी का व्यास दुगुना कर दिया जाए तो गुरुत्वाकर्षण शक्ति दुगुनी हो जाएगी। वायुमंडल की ऊँचाई खतरनाक रूप से घट जाएगी। सर्दीवाले क्षेत्र खूब बढ़ जाएँगे। प्राणियों के बसने योग्य क्षेत्र में भारी कमी हो जाएगी। यदि सूर्य से पृथ्वी की दूरी दुगुनी कर दी जाए तो अयन में घूमने का उसका वेग केवल आधा रह जाएगा। सर्दी दुगुनी होगी, सब प्राणी ठंड के मारे जम जाएँगे। यदि सूर्य से वर्तमान दूरी आधी कर दी जाए तो गर्मी चौगुनी हो जाएगी, अयन में घूमने का वेग दुगुना हो जाएगा। धरती तप्त हो जाएगी, सब प्राणी जल-भुन जाएँगे।" वे आगे लिखते हैं- "जितने भी जीवित कोष हैं उन सबमें प्रोटीन अवश्य होते हैं। वे पाँच तत्त्वों से बने होते हैं: कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, आक्सीजन और गंधक। प्रोटीन ऐमिनो अम्लों की लम्बी श्रृंखला से बनते हैं। जिस ढँग से वे अम्ल एक साथ रखे जाते हैं उसका भी भारी महत्त्व है। यदि गलत ढँग से उन्हें एक साथ रख दिया जाए तो जीवन धारण करने में समर्थ होने के बजाय वे जीवननाशक विष बन जाते हैं। रासायनिक द्रव्यों के समान प्रोटीन भी जीवन शून्य हैं। रहस्यपूर्ण जीवनीशक्ति जब उनमें प्रवेश करती है तभी वे जीवनधारण करते हैं। कोई अनन्त चेतन शक्ति ही यह समझ सकती है कि इस प्रकार का अणु जीवन का आधार बन सकता है। उसी शक्ति ने इसका निर्माण किया है और उसी ने इसे जीवन धारण करने योग्य बनाया है। उस शक्ति का नाम परमात्मा है।"

2. वैज्ञानिक का नाम-जेराल्ड टी. डेन हारतोग। गवेषणा कृषिविज्ञानविद्। अमेरिका में कृषि विभाग में कपास तथा अन्य रेशों के संबंध में गवेषणा संचालक। विषय-पौधों की दुनिया में ईश्वर की छाप। इस वैज्ञानिक के लेख का कुछ अंश-

"परमात्मा वनस्पति जगत् के आश्चर्यों और रहस्यों में कभी विफल न होने वाले नियमों के माध्यम से अपने आप को लगातार प्रकट करता रहता है। परमात्मा अपने आपको इन तरीकों में प्रकट करता है:

1. क्रमबद्धता-पौधों के बढ़ने और उनके प्रजनन की प्रक्रियाएँ जो कोषों के बड़े होने, विभक्त होने और खास कार्यों द्वारा होती हैं, एक योजनाबद्ध, नियमित और आश्चर्यजनक रूप से अस्खलित ढँग से होती हैं।

2. जटिलता-एक सीधे-सादे पौधे के भी प्रजनन और विकास में जो जटिल क्रियाएँ होती हैं उसकी तुलना कोई मानव निर्मित मशीन नहीं कर सकती।

3. सुन्दरता-पौधों के तनों, शाखाओं, पत्तों और फूलों में जो अद्भुत और दिव्य कलात्मक सुन्दरता होती है वह बड़े से बड़े कलाकार की प्रतिभा को भी मात दे देती है।

4. पैतृक परम्परा- बिना किसी भूलचूक के पौधे अपनी ही किस्म का प्रजनन करते हैं और वंश चलाते हैं। उनकी यह पितृ-परम्परा किसी अनियमित, अस्तव्यस्त और अनियंत्रित ढँग से नहीं चलती। पीढ़ी दर पीढ़ी सभी तरह के परिवेश और परिस्थितियों में गेहूँ से गेहूँ, जौ से जौ और जैतून से जैतून ही पैदा होता है। ऐसा कभी नहीं होता कि गेहूँ से जौ पैदा होने लगे और जौ से जैतून पैदा होने लगे। मेरे लिए यह सब सिरजनहार परमात्मा की जिसका ज्ञान अनन्त है और शक्ति भी अनन्त है, सत्ता के द्योतक हैं।"

3. वैज्ञानिक का नाम-डेल स्वार्तजेन दुबर। मृदा भौतिकीविद्। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में पहले मिट्टी विज्ञान के सहायक प्राध्यापक, फिर परड्यू विश्वविद्यालय में मिट्टियों के सह प्राध्यापक। मिट्टी के कमाल-इस वैज्ञानिक के लेख का कुछ अंश- "अनेक लोग तड़ित या बिजली को केवल विनाश का साधन ही समझते हैं, किन्तु यह ज्ञात है कि तड़ित के आवेशों से नाइट्रोजन के आक्साइड बनते हैं और वे वर्षा या तुषारपात के द्वारा मिट्टी तक पहुँच जाते हैं। तड़ित गर्जन का एक खास पहलू यह भी है कि आर्द्र-समशीतोष्ण प्रदेशों में गिरने वाले नाइट्रोजन की अपेक्षा उष्ण प्रदेशों में अधिक नाइट्रोजन गिरती है जो अर्धशुल्क प्रदेशों के लिए निर्धारित नाइट्रोजन से भी कहीं ज्यादा होती है। इस प्रकार वह महान व्यवस्थापक भौगोलिक प्रदेशों की उनकी आवश्यकताओं के अनुसार विविध रूप से सहायता करता है। महान् व्यवस्थापक की सत्ता से इन्कार करना ठीक उतना ही तर्कविरूद्ध है जैसे किसी पीली पकी लहराती फसल से शोभायमान हरे-भरे खेत की तो तारीफ करना, किन्तु साथ ही सड़क के किनारे अपनी छोटी सी झोंपड़ी में रहने वाले गरीब किसान की मौजदूगी से इन्कार करना।"

4. वैज्ञानिक का नाम-जान विलियम क्लोट्ज। 1945 में कन्कौर्डिया टीचर्स कालेज में जीव विज्ञान, शरीर-रचना शास्त्र और प्रकृति-विद्या के प्राध्यापक। प्रकृति की जटिलता और ईश्वर-इस वैज्ञानिक के लेख का कुछ अंश-"काश पुष्प (प्रिजन फ्लावर) बहुत असामान्य होते हैं। इस पौधे के भी दो प्रकार के पुष्प गुच्छ होते हैं-स्त्रीगुच्छ और पुँगुच्छ। ये दोनों प्रकार के गुच्छ वेदी के जो अधबीच से नीचे की ओर संकुचित होती है, अन्दर ही पैदा होते हैं। इसका परागीकरण आमतौर पर एक छोटी मक्खी द्वारा होता है जो अन्दर आती है, किसी तरह संकुचित भाग को पार कर जाती है, किन्तु ऐसा करने के बाद वह अपने आपको जाल में फँसा हुआ पाती है। उसके मार्ग में वेदी का संकुचित भाग ही नहीं किन्तु दोनों ओर चिपचिपे पार्श्व भी होते हैं जो उसे कहीं भी टिकने नहीं देते। तब वह जोर से बेतहाशा भिनभिनाती है, ऐसा करने में पराग उसके चारों ओर चिपट जाता है। उसके कुछ देर बाद ही दोनों पार्श्व फिर खुरदरे हो जाते हैं और वह पराग से भरी हुई बाहर निकलने में समर्थ हो जाती है। यदि वह किसी दूसरे पुँगुच्छ में जावे तो फिर यही प्रक्रिया होगी। किन्तु यदि वह किसी स्त्रीगुच्छ में जाए तो सम्भव है कि व बचकर न आ सके, क्योंकि उसके जोर से भिनभिनाने से पुष्प में पराग छिड़का जा चुका होता है और इस बार मक्खी के बचकर निकल जाने में पौधे की कोई रूचि नहीं है। पौधे का लाभ इसी में है कि वह उसे पुँवेदी से ही बचकर निकलने दे, ताकि वह अपने साथ पराग ले जा सके। स्त्रीपुष्प से मक्खी के बचकर निकलने की पौधे को कोई परवाह नहीं है। ये सब दृष्टांत परमात्मा की सत्ता की गवाही देते हैं। यह विश्वास करना कठिन है कि यह सब अन्ध अकस्मात् के कारण हुआ हो। इन घटनाओं की विद्यमानता किसी निर्देशक हाथ की ओर और उसकी सृजनशक्ति की ओर संकेत करती है।"

5. वैज्ञानिक का नाम-जार्ज अर्ल डेविस। भौतिकीविद्। 1948 से बुकलिन के नौसैनिक जहाज घाट की मैटीरियल लेबोरेटरी में न्यूक्लिओनिक्स विभाग के अध्यक्ष। वैज्ञानिक खोजों का संकेत ईश्वर की ओर-इस वैज्ञानिक के लेख का कुछ अंश- "कोई सृजन जितने ऊँचे परिणामवादी (इवोल्यूशनरी) विकास की ओर ले जाता है उस सृजन के पीछे सर्वोच्च बुद्धि की उतनी ही प्रबल साक्षी होती है। "निराकार और शून्यावस्थापन्न" प्रारंभिक कणों के विश्व से ये करोड़ों तारे और अरबों नक्षत्र बने हैं जिनका आकार निश्चित है, निश्चित रूप से जिनका वर्णन किया जा सकता है, जो अचल नियमों में बँधे हुए अपनी अनिवार्य जीवनयात्रा पूरी करते हैं और जो मानव के लिए अपरिमेय हैं। उन अत्यन्त सूक्ष्म मूल कणों में भी वे सब नियम निहित थे जो केवल ग्रह-नक्षत्रों को ही नहीं, किन्तु हजारों अन्य जीवित वस्तुओं को भी, यहाँ तक कि ऐसे प्राणियों को भी जो सोच सकते हैं, इच्छा कर सकते हैं, दुर्बोध तथा सुंदर चीजें पैदा कर सकते हैं। विश्व के विकास के पीछे किसी परात्पर बुद्धि की ये जो अभिव्यक्तियाँ हैं, वे परमात्मा की सत्ता सिद्ध करने के लिए मेरी दृष्टि से काफी हैं।" इस लेख में कुछ ही उदाहरण दिए गए हैं।

आर्य समाज
रावतभाटा वाया कोटा
(राजस्थान) 323307

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका – क्या आप मेरा भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल बता सकते हैं? अगर नहीं बता सकते, तो क्या आप ऐसे महानुभाव को जानते हैं, जो ऐसा करने में सक्षम है?

समाधान – कोई नहीं बता सकता, क्योंकि कोई जानता ही नहीं है। हाँ, मोटा–मोटा तो मैं बता सकता हूँ।

भूत, भविष्य और वर्तमान–तीनों के बारे में सुनिए। जिस व्यक्ति का यह प्रश्न है, वह वर्तमान काल में इस शिविर में, यहाँ आर्यवन में आया हुआ है। यह वर्तमान काल बता दिया न। भूत काल में उसके अंदर कुछ अच्छे संस्कार थे, इसलिए वह यहाँ इस शिविर में आया। अच्छे संस्कार नहीं होते, तो वह यहाँ आती ही नहीं। अब भविष्य काल सुनिये–अगर वो ऐसे ही शिविर में आता रहेगा, तो उसकी मुक्ति हो जाएगी। ठीक हो गया। तो वर्तमान, भूत, भविष्य की बात इतनी है।

भूतकाल को जानने से कोई लाभ नहीं है। जो बीत गया सो बीत गया। और वर्तमान में क्या हो रहा है, यह तो आप जानते ही हैं। इसको जानने से भी कोई लाभ नहीं है। एक भविष्यकाल की बात रही – **अगर आप पुरुषार्थी, बुद्धिमान और ईमानदार हैं, तो आप का भविष्य उज्ज्वल है,** बस। अगर आप में आलसीपन, बुद्धिहीनता और बेईमानी आ गयी, तो आपका भविष्य खराब है। बस, इस एक बात में सब बात आ जाती है।

शंका – क्या जादूगरी आँखों का धोखा होता है?

समाधान – हाँ है, क्योंकि :–

एक नियम है – 'कारण और कार्य का सिद्धांत'। घर में आटा नहीं होगा तो क्या रोटी बनेगी? नहीं। **अगर लकड़ी नहीं होगी तो क्या फर्नीचर बनेगा? नहीं। यह 'कारण–कार्य सिद्धांत' है।** इसी तरह से मैं जेब में हाथ डालूँ और बिल्ली निकल आए तो इसका मतलब जेब में बिल्ली थी। बस, इसी का नाम जादूगरी है। वो थी कहीं न कहीं, इधर–उधर छुपा रखी थी।

सृष्टि के कारण–कार्य सिद्धांत के बिना कुछ नहीं हो सकता। सृष्टि का नियम है। **एक नियम याद कर लीजिए – सृष्टि क्रम के विरुद्ध कोई कार्य नहीं हो सकता, और यहाँ तक मैं कह दूँ कि – ईश्वर भी नहीं कर सकता, मनुष्य तो क्या करेगा।**

अच्छा बताइए, अग्नि गरम है। क्या इस गरम अग्नि को ईश्वर ठंडा कर सकता है? नहीं। ईश्वर भी ठंडा नहीं कर सकता, सृष्टि नियम के विरुद्ध कार्य ईश्वर भी नहीं कर सकता, तो ये मनुष्य लोग क्या करेंगे। इतने में ही आप समझ लीजिए कि यह सब चालाकी और धोखा है।

कारण–कार्य सिद्धांत के विरुद्ध जादूगरी कुछ चीज नहीं, केवल आँखों का धोखा है। सब चालाकी और धोखेबाजी है। **हर आदमी पकड़ नहीं पाता, वो ऐसी चतुराई से काम कर लेते हैं।**

जादूगरी में या तो हाथ की सफाई होती है या कोई साइंस की बात होती है।

ऐसे दो चार हाथ जादूगरी के मैं भी जानता हूँ। मंत्र बोलकर मैं आग लगाना जानता हूँ। पर वो कोई जादूगरी नहीं है। आग लगाने वाले कहते हैं– **यह गाय का घी है और मैं अभी कटोरी में घी टपकाऊँगा और मंत्र बोलूँगा और इसमें आग लग जाएगी।**

असल में उस चम्मच में गाय का घी नहीं होता। वो ग्लिसरीन होती है। एक दूसरी पोटैशियम परमैग्नेट (लाल दवा) होती है। वो दाँत के डॉक्टर कुल्ला करने के लिए देते हैं। पोटैशियम परमैग्नेट का पाउडर कटोरी में पहले से ही रखा होता है। वो जनता को दिखाता नहीं और वो ऊपर से दो बूँद ग्लिसरीन टपका देते हैं। जब तक मंत्र बोलते हैं, तब तक उन दोनों में रिएक्शन हो जाता है। पोटैशियम परमैग्नेट में दो बूँद ग्लिसरीन टपकायेंगे तो उसमें आग लगेगी। वो लोग यह चतुराई करते हैं।

मंत्र बोलने से कोई आग नहीं लगती। **अगर मंत्र बोलने से आग लगती हो तो पहले मन्त्र बोलने वाले के मुँह में लगनी चाहिए।** पर मुँह में लगती नहीं।

ऐसे ही भूत–प्रेत की बात करते हैं। कहते हैं कि – शीशी के अंदर मैंने भूत–प्रेत बंद कर रखा है। छोटी सी एक शीशी (दो ढाई इंच की शीशी) का ढक्कन खोल देंगे और हॉरिजोंटल (आड़ी) स्थिति में उस शीशी को रखेंगे। हम चॉक से बोर्ड पर लिखते हैं। उस चॉक के टुकड़े को उस शीशी के मुँह पर रख देंगे और फिर किसी व्यक्ति को बुलाएंगे। कहेंगे कि – "आइए, जरा फूँक मारकर, हवा मारकर इस टुकड़े को इस शीशी के अंदर डालिए।" जब वो फूँक मारकर अंदर डालने का प्रयास करेगा तो वो चॉक का टुकड़ा अन्दर नहीं जाएगा बल्कि बाहर गिरेगा। जब वो बाहर गिरेगा तो कहेगा – "इसमें मैंने एक भूत आत्मा, प्रेत–आत्मा बंद कर रखी है, वो इसको बाहर फेंकती है, अंदर घुसने नहीं देती।" यह सब चालाकी है, झूठ है, धोखा है। अब उस शीशी को आप वर्टीकल (सीधी) खड़ी कर दीजिए। अब वही टुकड़ा डालिए, तो वो तुरंत अंदर चला जाएगा। अब क्यों चला गया। ऐसे क्यों नहीं जा रहा था? यह साइंस की बात है।

चॉक का टुकड़ा भारी है, हवा उससे हल्की है। जब शीशी हॉरिजोन्टल रखी जाती है, फिर वहाँ चॉक का टुकड़ा रखते हैं और जब हम चॉक के टुकड़े को अंदर फेंकने के लिए फूँक मारते हैं तो हवा हल्की होने की वजह से वो टुकड़े से पहले अंदर चली जाती है। बाहर की हवा शीशी के अंदर जाती है और अंदर की हवा धक्का खाकर बाहर आती है। जब अंदर की हवा बाहर आती है तो बाहर आती हवा के धक्के से टुकड़ा बाहर ही तो गिरेगा, अंदर थोड़े ही जाएगा। जब शीशी सीधी खड़ी कर देते हैं और तब वो टुकड़ा रखते हैं तो तुरंत अन्दर चला जाता है। अब वहाँ ग्रेविटेशन–फोर्स (गुरुत्वाकर्षण) का नियम लागू होता है। कहाँ गया भूत–प्रेत? खामखां धोखा है। जादूगरी के चक्कर में नहीं आना।

शंका : क्या झाड़–फूँक करने वाले बाबाजी अथवा टोटके आदि करने वाले बाबाजी सब कोरा ढोंग मात्र हैं। तो फिर झाडू मारने से मिर्गी कैसे भाग गई?

समाधान : ऐसा तो हो नहीं सकता। ऐसे किस्सों के हमने परीक्षण भी करवाए हैं। यहाँ ध्यान रखें :–

इसमें कुछ अंश मानसिक–रोग का होता है। वो झाड़फूँक से ठीक हो जाता है। क्योंकि झाड़फूँक भी एक मानसिक–चिकित्सा है।

जो शारीरिक रोग है, वो शारीरिक चिकित्सा करवाने से ही ठीक होता है। इसलिए यह झाड़फूँक करवाने से अधिक लाभ नहीं है। उससे पाखण्ड को बढ़ावा भी मिलता है। इसलिए उसके चक्कर में नहीं आना।

मानसिक रोग की 'मानसिक–चिकित्सा' से ही करें। और **'मानसिक–चिकित्सा' की सबसे बढ़िया पद्धति 'अष्टांग योग' है।** मन के विचारों को रोको, शुद्ध चिंतन करो, ईश्वर, जीव, प्रकृति का विचार करो और करने योग्य कार्य को करो, न करने योग्य कार्य को मत करो, इस तरह से मानसिक–चिकित्सा होती है। यह सबसे उत्तम पद्धति है।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

अविभाजित मध्यप्रदेश के निर्विवाद आर्य नेता– दिवंगत रमेशचन्द श्रीवास्तवः पुण्य स्मरण

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

स्व श्रीवास्तव जी से प्रायः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशनों में भेंट होती तो वे अविभाजित मध्य प्रदेश की सभा के मंत्री थे और उस समय इस सभा में विदर्भ और नागपुर का क्षेत्र भी था 'मध्यकाल' में देशी रियासतें थीं। उन दिनों रमेशजी में नया उत्साह, नई उमंग, नवीन प्रेरणाएँ, हिलोरें लेतीं थीं। इस मिलन का कोई न कोई शुभ परिणाम निकलना ही था और यह हमारे स्नेह सम्बन्ध के रूप में प्रस्तुत हुआ। उनकी सुपठित, सुशिक्षित रूप–गुण सम्पन्न कन्या मेरे घर में पुत्रवधू बनकर मंगलों की वर्षा करती आई।

विगत वर्षों में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के मंत्री तथा बाद में प्रधान के पदों पर कार्य करते हुए आपने जिस योग्यता तथा कौशल से अपने दायित्व को निभाया, वह निश्चय ही प्रेरणाप्रद था। उन्होंने प्रान्तीय सभा की परिसम्पत्तियों का संरक्षण

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

thearyasamaj.org

वैदिक विज्ञान की मान्यताएँ

● कृपाल सिंह वर्मा

(1) सृष्टि की रचना विज्ञान सम्मत है, इसलिए इस विज्ञान को जानने वाला कोई अवश्य है।

(2)ज्ञान चेतन का गुणा है, इसलिए वह जड़ नहीं, चेतन है।

(3)ब्रह्मण्ड अनन्त है, कोई अनन्त चेतन शक्ति ही इसकी रचना कर सकती है। वह शक्ति साकार नहीं हो सकती क्योंकि साकार एक देशीय होता है। वह चेतन शक्ति निराकार है।

(4)वह सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान है क्योंकि वह सब कार्य बिना किसी का सहायता के करता है।

(5)वह ईश्वर परम दयालु है क्योंकि आत्माओं को सुख देने के लिए ही वह सृष्टि की रचना करता है।

(6)इस प्रकार तीन नित्य सत्ताएं हैं।

(1) परमात्मा (2) आत्मा (3) मूल प्रकृति

(7)परमात्मा सर्वव्यापक है क्योंकि परिछिन्न सृष्टि रचना करने में असमर्थ है।

(8)परमात्मा सृष्‍ठी की रचना अपने सर्वोत्तम रूप में करता है। सर्वोत्तम कभी नहीं बदलता। इसलिए हर बार सृष्टि रचना एकसी ही होती है–

''सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्

(9)सर्गकाल एवं प्रलयकाल एक निश्चित समय तक चलता है। यह सदैव अपरिर्वतन है।

(10) जड़ परमाणु स्वयं गति नहीं कर सकते। इसलिए परमात्मा अपनी अनन्त प्राण शक्ति से इन्हें गति प्रदान करता है। इस क्रियाशीलता से परमाणु संयुक्त होकर वायु, अग्नि, आपः तथा पृथिवी तत्त्व का निर्माण करते हैं।

(11) आकाश तत्त्व सदैव विद्यमान रहता है। इसका गुण शब्द है। इस प्रकार वायु का गुण स्पर्श, अग्नि का रूप, जल का रस तथा पृथिवी का गन्ध गुण प्रकट होता है।

(12) ब्रह्मण्ड को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। (1) भूलोक (2) अन्तरिक्षलोक (3) द्युलोक। भूलोक की दिव्य शक्ति अग्नि है।

अन्तरिक्षलोक की दिव्य शक्ति इन्द्र अर्थात् विद्युत् है। तथा द्युलोक की दिव्य शक्ति सूर्य है।

(13)अग्नि उत्पादक पदार्थ को सोम कहते हैं।

(1)पृथ्वी पर पाए जाने–वाले ईंधन को भूलोक का सोम कहते हैं।

(2)अन्तरिक्ष लोक में पाए जाने वाले वायु को जिससे अग्नि उत्पन्न होती है अन्तरिक्ष लोक का सोम कहते हैं।

(3)सूर्य में पाए जाने वाला पदार्थ जिसके जलने से सूर्य चमकता है द्युलोक को सोम कहते हैं। वैशेषिक दर्शन के प्रशस्तपाद भाष्य में जल को ही सूर्य का ईंधन माना गया है।

(14) निरुक्तशास्त्र में यास्काचार्य ने माना है कि देवता एक दूसरे को जन्म देते हैं अर्थात इन्द्र (विद्युत) अग्नि को जन्म देता है तथा अग्नि इन्द्र को जन्म देती है। (1)सूर्य से आने वाली अग्नि इस पृथ्वी पर वृक्षादि को जन्म देती है। तथा फिर ये वृक्षादि जलकर अग्नि पैदा करते हैं।

(16) वैदिक विज्ञान मानता है कि इस शरीर को पाँच कोषों में विभक्त किया जा सकता है ये कोष क्रमशः एक दूसरे के अन्दर अवस्थित होते हैं।

(1) अन्नमय कोष

जो बाह्य स्थूल शरीर है ये अन्नमय कोष है।। इसमे पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा पाँच कर्मोन्दियाँ निहित हैं।

(2)प्राणमय कोष– यह अन्नमय कोष के अन्दर होता है। यह अन्नमय कोष का संचालन करता है। शरीर के जिस अंग से प्राणमय कोष समाप्त हो जाता है वह अंग सूख जाता है तथा मन से आने वाले आदेशों का पालन नहीं करता।

(3)मनोमय कोष – यह प्राणमय कोष के अन्दर होता है। मनोमय कोष प्राणामय कोष का संचालन करता है। आध्यात्मिक ज्ञान की कमी के कारण जब मनोमय कोष में दोष आ जाता है तो यही दोष प्राणामय कोष में चला जाता है तथा यही दोष फिर अन्नमय कोष में चला जाता है। यही कारण है कि मन में तनाव होने पर भूख न लगना, कब्ज होना अंगों का काँपना, मधुमेह तथा हृदय रोग हो जाते हैं। मन के स्वस्थ रहने पर ये रोग नहीं होते। इसलिए आध्यात्मिक ज्ञान परम औषधि है।

दाँतों के नीचे जीभ दबाकर मनोमय शरीर के द्वारा वर्णमाला के सारे अक्षर बोले जा सकते हैं।

(4)विज्ञानमय कोष – विज्ञान मय कोष मनोमय कोष को संचालित करता है। जब मन किसी दुविधा में होता है तो बुद्धि ही उसका निराकरण करती है। विज्ञानमय कोष के अन्तर्गत पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा बुद्धि का समावेश होता है।

(5)आनन्दमय कोष – यह विज्ञानय कोष को संचालित करता है। जब बुद्धि से काम नहीं चलता तो आत्मा आनन्द के आधार पर ही निर्णय करती है। आनन्द ही जीवन है। आनन्द प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य है। परमात्मा के आनन्द स्वरूप में मग्न होकर ही तत्त्व ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

(17) (1) प्रकृति सत् है अर्थात् प्रकृति की सत्तामात्र है।

(2) आत्मा सत् एवं चित् है। अर्थात् आत्मा वर्तमान होने के साथ–साथ चेतन भी है।

(3) परमात्मा सत् चित् आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप है।

जीवात्मा जब प्रकृति की उपासना करता है तो सुख–दुःख का अनुभव करता है, जब परमात्मा की उपासना करता है तो आनन्द स्वरूप हो जाता है।

(18) आत्मा के प्रकृति के सम्पर्क में आने से, अर्थात् मनुष्य शरीर धारण करने पर, आठ विकार आत्मा में उत्पन्न होते हैं–

(1) धर्म–अधर्म (2) ऐश्वर्य–अनैश्वर्य, (3) वैराग्य–अवैराग्य (4) ज्ञान–अज्ञान धर्म, अधर्म। ऐश्वर्य, अनैश्वर्य, वैराग्य, अवैराग्य तथा अज्ञान से बन्धन होता है तथा ज्ञान से मुक्ति होती है।

(19) शरीर जल से, मन सत्याचरण से, बुद्धि ज्ञान से तथा आत्मा शुभ कर्मो से पवित्र होता है।

(20) चार पुरुषार्थ हैं।

(i) धर्म (ii) अर्थ (iii) काम (iv) मोक्ष

(1) यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धिः सः धर्मः।

धर्म– के अनुसार वैशेषिक दर्शन के अनुसार जिन कर्मों के करने से मनुष्य उन्नति करता है अर्थात् आत्मा पवित्र होता है तथा जिन कर्मों के करने से मनुष्य का मोक्ष अर्थात् सब दुःखों से छूटना हो वे सब धर्म हैं।

वेदस्मृतिसदाचार, स्वस्य च प्रिय आत्मनः।
एतत् चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्।।

मनुस्मृति के अनुसार–

(i) वेद में जिन कर्मों के करने की प्रेरणा की गई है।

(ii) स्मृति ग्रन्थों में जिनका विधान है।

(iii)जो सत्पुरुषों के आचरण के अनुरुप हैं।

(iv) उपरोक्त कर्मों में जो–जो कर्म अपने आत्मा को प्रिय लगते हैं वे ही धर्म हैं। ''धर्म तत्त्वं निहितं गुहायाम्'' धर्म को जानने की इच्छा से जब मनुष्य परमात्मा का ध्यान करता है तो अपना धर्म हृदय में प्रकट हो जाता है।

(2)दूसरा पुरुषार्थ अर्थ है। अर्थ कहते हैं धन आदि साधन हैं। धर्म से जो प्राप्त किया जाए वह अर्थ है तथा जो अधर्म से प्राप्त होता है वह अनर्थ है। धन अर्थात् अर्थ की पवित्रता सर्वोपरि है। महाराज मनु ने कहा है– ''सर्वेषां शौचानां अर्थ शौचं पर स्मृतम्'' सबसे बड़ी पवित्रता धन की पवित्रता होती है।

(3)तीसरा पुरुषार्थ है काम। धर्म से धन संख्य का संचय करने के उपरान्त मनुष्य अपनी पवित्र कामनाओं को पूरा करता है। कामना करना ही जीवन है। कामना के बिना व्यक्ति क्षणभर भी नहीं रह सकता। आँख का खोलना तथा मींचना भी कामना से ही होता है। संसार में केवल उन्ही का नाम है जिन्होंने अपनी–अपनी महान कामनाओं को पूर्ण किया है।

(4)चौथा पुरुषार्थ है मोक्ष। जब मनुष्य को लौकिक कामनाओं की निस्सारता का ज्ञान होने लगता है तो वैराग्य की उत्पत्ति होती है। तब मनुष्य परम सुख मोक्ष की कामना करने लगता है। सांख्य दर्शन में कहा है– ''ज्ञानात्–मुक्ति'' अर्थात् ब्रह्म ज्ञान से मुक्ति होती है। सभी लौकिक भोग कर्मों के फल हैं परन्तु मोक्ष ज्ञान का फल है। कहा है ''ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यम्'' ज्ञान की पराकाष्ठा ही वैराग्य है। आत्मज्ञान के कारण मनुष्य का संसार के प्रति राग समाप्त हो जाता है। न्याय दर्शन में महर्षि गौतम ने कहा है–''वीतराग जन्म रागरहित पुरुषों का जन्म नहींदेखा जाता। जिसका इस संसार में जन्म होता है उसका संसार के प्रति लगाव अवश्य होता है। लेकिन दुःख रहित अवस्था को प्राप्त करना कोई साधारण कार्य नहीं है। इसलिए महर्षि कपिल ने कहा है–

''अथ त्रिविदुःखात् अत्यन्तनिवृति अत्यन्तपुरुषार्थः।''

तीनों प्रकार के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति अत्यन्त पुरुषार्थ का कार्य है।

(21) दुःख तीन प्रकार के होते हैं।

(i) आध्यात्मिक दुःख (ii) आधिदैविक दुःख (iii) आधिभौतिक दुःख

(1)पहला है आध्यात्मिक दुःख, शरीर में, मन में तथा बुद्धि में दोष आने के कारण जो दुःख प्राप्त होता है उसे आध्यात्मिक दुःख कहते हैं। इस दुःख का निवारण आध्यात्मिक ज्ञान से ही होता है। जन से शरीर, सत्याचरण से मन, ज्ञान से बुद्धि तथा शुभ कर्मों से आत्मा पवित्र होती है।

(2)दूसरा है आधिदैविक दुःख। प्रकृति के निर्जीव पदार्थों से मिलने वाले दुःख को आधिदैविक दुःख कहते हैं। सर्दी, गर्मी तथा बिजली ओले आदि से मिलने वाला दुःख। आधिदैविक ज्ञान से इस दुःख का निराकरण होता है। आधिदैविक ज्ञान है प्रकृति की दिव्य शक्तियों का ज्ञान। दिव्य शक्तियाँ तीन हैं–अग्नि, विद्युत तथा सूर्य। इनके विज्ञान को जानकर इनका उपयोग जीवन को सुखी बनाने के लिए किया जाता है। आधुनिक विज्ञान यही कार्य कर रहा है।

(3)तीसरा है आधिभौतिक दुःख। प्राणियों से मिलने वाले दुःखों को आधिभौतिक दुःख कहते हैं। आधिभौतिक ज्ञान द्वारा ही इस दुःख का निराकरण होता है। आधिभौतिक ज्ञान है अन्य प्राणियों के व्यवहार का ज्ञान। इसमें राजनीतिक ज्ञान, सामाजिक ज्ञान, पशु पक्षियों के व्यवहार का ज्ञान आदि आते हैं। सभी प्रणियों के साथ युक्ति युक्त यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

253 शिव लोक कंकर खेड़ा मेरठ
फोन न. 9927887788

thearyasamaj.org

हिंदू कोई धर्म नहीं, हमारा धर्म तो वैदिक और सनातन है!

● अश्विनी कुमार पाठक

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद ने अपने ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में यह लिखा है कि मनुष्यों की सृष्टि की उत्पत्ति एक अरब छियानवे करोड़ कई लाख और कई सहस्र वर्ष पूर्व त्रिविष्टप नाम के स्थान पर हुई थी, जिसे आजकल तिब्बत कहा जाता है। ईश्वर ने चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था, जो सब मनुष्यों के लिए आवश्यक था, जिसका वर्णन सातवें समुल्लास में किया गया है, क्योंकि मनुष्यों में स्वाभाविक ज्ञान नहीं होता।

वेद चार हैं। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद और अंगिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। वेद में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ–यह वाक्य आया है, जो विशेषण है। उस समय के मनुष्यों ने इसी नाम को अपना लिया और अपने आप को आर्य कहने लगे। कुंछ समय बाद इनमें दस्यु कहाने वाले लोगों में आपस में झगड़े होने लगे, जिस पर आर्य कहे जाने वाले लोग इस देश में आकर रहने लगे और इस देश का नाम आर्यावर्त नाम दिया गया अर्थात् आर्यों द्वारा बसाया गया। आर्यों से पहले इस देश में कोई नहीं रहता था। इसके बाद वह दूसरे देशों में भी वसआऐ इस लिऐ सब के पूर्वज पहले प्रचि ही कहलाते थे।

पर्याप्त समय बाद भरत राजा के नाम पर इस देश को भारत कहा जाने लगा, परंतु यहाँ के निवासी आर्य ही कहलाते रहे। रामायण और महाभारत ग्रंथों से यह सिद्ध होता है कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है।

समय बीतने पर यहाँ बाहर से आक्रमणकारी आने लगे। उन्होंने यहाँ के निवासियों को हिंदू कहना आरंभ कर दिया और देश को भारत के स्थान पर हिंदूस्तान कहा जाने लगा। फिर यहाँ अंग्रेजों का राज्य हो गया और उन्होंने इस देश को इंडिया नाम दे दिया। यहाँ के निवासियों को इंडियन कहा जाने लगा। इस समय यहाँ अनेक मतों के लोग रहते हैं, जो हिंदू, बौद्ध, जैन, मुसलमान, ईसाई, सिख आदि कहलाते हैं। कुछ समय पहले लोगों ने आर्य नाम छोड़ दिया और हिंदू नाम ही अपना लिया और अपना धर्म भी वैदिक अथवा सनातन के स्थान पर हिंदू कहने लगे, साथ ही, आर्य नाम को सर्वथा भुला दिया गया।

अब हिंदूओं में कई विचारधाराओं के लोग हैं जो अलग–अलग कई देवताओं की पूजा करते हैं, जिनके नाम ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काली, सरस्वती, गणेश इत्यादि हैं। ये लोग ईश्वर को निराकार भी मानते हैं और श्रीराम, श्रीकृष्ण इत्यादि को ईश्वर के अवतार मानते हैं, जबकि महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज के लोग केवल निराकार ईश्वर को ही मानते हैं। यजुर्वेद 32–3 में स्पष्ट कहा है न तस्य प्रतिमास्ति, यस्य नाम महद्यशः अर्थात् उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है, परंतु फिर भी अधिकांश लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं, जिनके आगे जानवरों की बलि भी दी जाती है और राजस्थान में एक देवी की मूर्ति को शराब का भोग भी लगाया जाता है।

अलग–अलग विचारों के कारण हिंदू कोई धर्म नहीं है। हमारे शास्त्रों में हिंदू शब्द तक नहीं है। फिर भी, पता नहीं क्यों बड़े–बड़े विद्वान भी हिंदू शब्द को छोड़ने को तैयार नहीं हैं। धर्म के लिए सनातन शब्द तो एक स्थान पर आया है और कहा गया एषः धर्मः सनातनः। इसलिए अनेक व्यक्ति सनातन धर्म को मानते हैं।

महर्षि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के 100 नामों का वर्णन किया है और ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, दुर्गा इत्यादि को ईश्वर के नाम बताया था और उसका मुख्य ओम् बताया था। उन्होंने कहा था कि मेरा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है, जो ब्रह्मा ऋषि से जैमिनी मुनि तक चलता आया है और हमारा प्राचीन नाम आर्य है, हिंदू नाम विदेशियों का दिया हुआ है। इसलिए आर्य ही अपनाना चाहिए। उन्होंने 31 दिसंबर 1880 को आर्य समाज मुलतान (अब पाकिस्तान) के मंत्री मा. दयाराम वर्मा को पत्र लिखा था कि आर्य समाज के लोग जनगणना में धर्म के खाने में वैदिक धर्म और जाति के खाने में आर्य लिखवाएँ। परंतु आर्य समाज के नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, इसलिए आर्य समाज के लोग भी अपना धर्म हिंदू ही लिखते–लिखवाते जा रहे हैं। कुछ लोगों ने यह भी बताया कि जनगणना के स्टाफ ने वैदिक धर्म लिखने से मना कर दिया और कहा कि उनके पास तो वैदिक धर्म का कहीं नाम ही नहीं है। इसलिए आर्य समाज के बड़े नेताओं को इस बारे में केंद्र सरकार से बात करनी चाहिए कि वह वैदिक धर्म को मान्यता दे अभी उड़ीसा के स्वामी धर्मानंद ने 200 परिवारों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी है। अब सभी आर्य समाजों में ऐसी दीक्षा दी जानी चाहिए, तभी वैदिक धर्म अस्तित्व में आ सकता है। इससे ही आर्य समाजियों कि परिवार भी जब वैदिक धर्मी बनेंगे तो आर्य समाज की उन्नति होगी, क्योंकि अधिकांश परिवार आजकल आर्य समाजी नहीं हैं।

अभी गोवा के एक मंत्री ने कहा है कि मोदी हिंदू राष्ट्र बनाएँगे। इस पर वहाँ के उपमुख्यमंत्री श्री डिसूजा ने कहा है कि भारत तो पहले से ही हिंदू राष्ट्र है, क्योंकि हिंदूस्तान में रहने वाले सब लोग हिंदू हैं, मैं भी एक ईसाई हिंदू हूँ। वास्तव में गोवा के उपमुख्यमंत्री का, जो एक ईसाई मतानुयायी हैं, अपने आपको हिंदू कहना ठीक ही है क्योंकि हिंदू धर्म अथवा मत नहीं है, इसलिए भारत को हिंदू राष्ट्र कहना भी गलत नहीं है। यहाँ के निवासियों को जब आर्य के स्थान पर हिंदू कहना शुरु हो गया तो देश को भी भारत की जगह हिंदूस्तान कहा जाने लगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अध्यक्ष श्री भागवत ने भी कहा है कि यहाँ के सब निवासी हिंदू हैं।

धर्म अथवा मत और राष्ट्र ये दोनों अलग–अलग होते हैं। हमारा प्राचीन नाम तो आर्य था, जो सब वेद शास्त्रों में लिखा है। भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश के लोगों के पूर्वज भी आर्य अथवा हिंदू कहलाते थे – इसमें कोई संशय नहीं है। उनका धर्म भी वैदिक अथवा सनातन कहा जाता था। हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जब इंडोनेशिया की यात्रा पर गए, तो उनके सम्मान में सरकार ने रामायण का नाटक दिखाया था। इस पर पंडित नेहरू को बड़ी हैरानी हुई। पूछने पर वहाँ के राष्ट्रपति ने कहा कि हम लोगों ने अपना धर्म बदला है, पूर्वज नहीं। इसलिए भारत में रहने वाले सब व्यक्ति अपने आपको हिंदू भी कह सकते हैं। हिंदू कोई धर्म नहीं है। हम सब हिंदूस्तान के नागरिक होने के नाते हिंदू भी कहला सकते हैं। आर्य समाज के लोग अपना धर्म वैदिक मानते हैं, इसलिए अन्य व्यक्ति अपना धर्म सनातन कह सकते हैं – जो हमारा राष्ट्रीय नाम है। परंतु हिंदू शब्द तो हमारे शास्त्रों में नहीं है। यह फारसी भाषा का शब्द है। कुछ लोग हिंदू की जगह अपने को हिंदूस्तानी कहते हैं, वह ठीक नहीं है, परंतु पहले हमें हिंदू नाम दिया गया फिर देश को हिंदूस्तान।

वास्तव में धर्म अथवा मत तथा राष्ट्र अलग–अलग होते हैं। हमारे देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त था और निवासी आर्य कहलाते थे, परंतु धर्म वैदिक था। कुछ समय बाद देश का नाम भरत राजा के नाम पर भारत हो गया। इसके बाद विदेशी आक्रमणकारियों ने हमें हिंदू कहना आरंभ कर दिया तथा देश को हिंदूस्तान कहा जाने लगा। जब अंग्रेजों का राज हुआ तो वे हमें इंडियन कहने लगे और देश का नाम इंडिया हो गया। इस प्रकार हमारे देश के कई नाम हो गए, जो ठीक नहीं। अब केंद्र सरकार को इसका एक ही नाम भारत घोषित करना चाहिए, फिर उसके बाद उसी नाम से यह राष्ट्र कहलाएगा और इसके निवासी भारतीय कहलाएँगे।

सी–233, नानकपुरा, नई दिल्ली–21
फोन– 011–26871636

☞ पृष्ठ 05 का शेष

अविभाजित मध्यप्रदेश....

ही नहीं किया बल्कि उसे बढ़ाया भी। इसके कारण वर्तमान छत्तीसगढ़। स्थित प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अनेक शिक्षण संस्थाएँ चल रहीं थीं, उनका योग्यतापूर्वक संचालन श्रीवास्तव जी निष्ठापूर्वक करते रहे हैं। मुझे उनके इस कार्यकाल में दुर्ग, भिलाई, बिलासपुर तथा रायपुर आदि नगरों में प्रचारार्थ जाने का अवसर मिला और मैंने देखा कि उनके कार्यक्षमता और सेवाभाव सर्वत्र दिखाई दे रहा है। उनके कार्यकाल की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है, दुर्ग में दयानन्द परिसर तथा आर्य नगर के व्यावसायिक केन्द्रों का निर्माण और विकास, पारिवारिक यज्ञों और सत्संगों को सफल बनाने में उनका योगदान कितना महत्वपूर्ण रहा है। यह हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। विगत कुछ समय से वे अनेक कठिन रोगों के दुश्चक्रों में घिरे रहे जो अततः घातक सिद्ध हुआ। मेरा उनका सम्बन्ध तो बहुआयामी रहा। उसमें जहाँ सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम आते थे, साथ ही पारिवारिक सम्बन्धों की मधुरता भी थी। वे मुझ से आयु में छोटे थे। उनका वियोग परिवार के अतिरिक्त एक सामाजिक क्षति भी है। परमात्मा उन्हें चिर शान्ति प्रदान करे।

315 शंकर कालोनी, गंगानगर

thearyasamaj.org

अपने शत्रु के कटु व्यवहार का बदला सद्भावनायुक्त व्यवहार से दें।

● नीला सूद

किसी के अपकार का बदला अपकार से देना या आँख फोड़ने वाले की बदले में आँख फोड़ देना उचित हो सकता है परन्तु इसके हानिकारक प्रभाव भी हो सकते हैं। चाहे आप युद्ध जीत लें परन्तु दिल के एक कोने में आपको कुछ खालीपन का अनुभव होता है और लगता है कि आपकी कोई मूल्यवान वस्तु आपसे दूर हो गई है। महात्मा गांधी के शब्दों में, "आँख के बदले दूसरे की आँख को फोड़ने का परिणाम संसार को अन्धा कर सकता है।" समय बीतने के साथ किसी समय उपलब्धि दिखने वाली यह बात, निराशा व पछतावे में बदल जाती है। ऐसी परिस्थिति में, अपने प्रतिशोध को पूरा करने का दूसरा सुन्दर उपाय भी है और वह है कि हमारा बदला ऐसा हो कि दूसरे का हृदय परिवर्तन कर दे और आपसी वैमनस्य को खत्म कर आपसी सम्बन्धों को सुधार दे। ऐसा करने से गलत काम करने वाले के मन में एक नया परिवर्तन होता है। अक्सर ऐसा करने पर विरोध मित्रता का रुप ले लेता है जो कि एक उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती है। ऐसा करने से हमारे मित्रों की संख्या में वृद्धि होती है और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिसके जितने अधिक मित्र होते हैं वह उतना ही अधिक इस धरती पर स्वयं को सुखी व सन्तुष्ट अनुभव करता है।

जैसा हम जानते हैं बर्लिन की दीवार पूर्वी बर्लिन और पश्चिमी बर्लिन को बाँटती थी। कुछ पूर्वी बर्लिन वासियों ने पश्चिमी बर्लिन वासियों के प्रति गहरा द्वेष भाव अपने अन्दर उत्पन्न कर लिया था। इसी द्वेष भाव् के कारण पूर्व बर्लिन वालों ने पश्चिम बर्लिन वासियों का अपमान करने के लिऐ एक ट्रक में कूड़ा, ईंट के टुकड़े और अन्य अनाप– शनाप व्यर्थ की वस्तुएँ भरकर चोरी छिपे पश्चिमी बर्लिन वासियों को भेजीं। जब पश्चिम बर्लिन वालों को उसका पता लगा, तो वे इससे कुपित हुए और उन्होंने चाहा कि वह भी उसके बदले में वैसा ही व्यवहार करें।

> **प्रतिशोध की भावना से अन्धे होकर आँख के बदले आंख लेने की जगह इस प्रकार के प्रेम युक्त मधुर व्यवहार को अपनाकर आज के युग में शत्रुता के रवैये को मित्रता में बदला जा सकता है खास कर जबकि आज द्वेष भावना व इससे उत्पन्न हिंसा ने सबमें परस्पर डर पैदा किया हुआ है। यह स्थिति मानवता के लिए शर्मनाक है।**

पश्चिम बर्लिन वासियों ने पूर्वी बर्लिन वासियों को एक ऐसा उपहार भेजने का निर्णय किया जिससे कि उनके किए गए अपमान का उचित बदला लिया जा सके। उनमें से एक बुद्धिमान व्यक्ति को जब पता लगा तो उसने उनको परामर्श दिया कि उनके भेजे सामान के बदले में उनको भोजन, कपड़े और चिकित्सा का सामान, दुर्लभ वस्तुएँ एवं मूल्यवान पदार्थ भेजें। उन्होंने, उस सामान के साथ एक पत्र भी रखा, जिसमें कहा गया था कि हर कोई अपने सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार देता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पश्चिमी बर्लिन के इस उदारपूर्ण कार्य से दोनों पक्षों में विश्वास का भाव एवं अच्छे सम्बन्ध पैदा हुए।

बुद्धिमान मनुष्य महान गुणों को जीवन में धारण करते हैं व उनका पालन करते हैं। एक जुनूनी धार्मिक अन्धविश्वासी व्यक्ति समाज सुधारक सन्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्धविश्वासों व कुरीतियों के खण्डन एवं सत्य मान्यताओं में मण्डन से चिढ़कर प्रायः हर समय चिल्लाकर–चिल्लाकर उनके लिए अपशब्दों व गालियों का प्रयोग करता था। एक दिन स्वामीजी का एक अनुयायी उनके लिए फलों की एक टोकरी ले कर आया। स्वामीजी ने तुरन्त अपने एक अन्य भक्त को पास बुलाया और उसे टोकरी में से कुछ फल ले जाकर उस गेरुए वेशभूषा वाले व्यक्ति को देने को कहा जो प्रतिदिन उन्हें गालियाँ दिया करता था। उन्होंने उसे यह संदेश भी भेजा कि उसे इन फलों की अधिक आवश्यकता है क्योंकि स्वामीजी के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उसे गालियाँ देने में अपनी भारी ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। स्वामीजी का भक्त स्वामीजी की यह बात सुनकर हतप्रभ रह गया पर स्वामीजी की इच्छानुसार उसने उस व्यक्ति के पास जाकर उसको फल देकर स्वामी जी का सन्देश भी दे दिया। वह व्यक्ति स्वामीजी के उस व्यवहार से चकित रह गया और स्वयं को लज्जित अनुभव करते हुए उनके पास क्षमा माँगने जा पहुँचा। उसका हृदय परिवर्तन हो गया और वह उनका अनुगामी भक्त बन गया। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि उदारता व दान आदि गुणों को धारण करने से शत्रु को मित्र में बदला जा सकता है। यह प्रतिशोध के पवित्र तरीके को अपनाने से मिलने वाली शक्ति है।

प्रतिशोध की भावना से अन्धे होकर आँख के बदले आंख लेने की जगह इस प्रकार के प्रेम युक्त मधुर व्यवहार को अपनाकर आज के युग में शत्रुता के रवैये को मित्रता में बदला जा सकता है खास कर जबकि आज द्वेष भावना व इससे उत्पन्न हिंसा ने सबमें परस्पर डर पैदा किया हुआ है। यह स्थिति मानवता के लिए शर्मनाक है।

सह सम्पादक
वैदिक थोट्स
09217970361
0172–2662870

विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन कनाडा के आर्य समाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया।

आचार्य शास्त्री जी ने विशाल जन समुदाय को प्रभावपूर्ण शैली में सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वार्थवश हम तो अग्नि को दे रहे हैं कुछ लेने के लिए, परन्तु अग्नि ले रहा है हमें कुछ देने के लिए, तो देवता कौन हुआ–अग्नि। अग्नि सब देवताओं का मुख है। जो लेकर अपने पास नहीं रखता, दूसरों को दे देता है उसी का नाम देवता है।

यज्ञ के मुख्य यजमान श्री प्रफुल्ल लखानी एवं श्रीमती मीना लखानी थे। इस महायज्ञ में 250 परिवारों ने यजमान बनकर पुण्यलाभ प्राप्त किया तथा हजारों श्रद्धालुओं ने विश्वशान्ति एवं मानव कलयाण के लिए आहुतियाँ प्रदान की। अनेक लोगों ने जहाँ गायत्री जाप का संकल्प लिया वहां अनेक यजमानों ने यज्ञ करने का व्रत लिया। समाज के यशस्वी प्रधान श्री अमर ऐरी जी एवं मंत्री श्री यश कपूर जी ने आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद किया।

thearyasamaj.org

'ईश्वर सर्वव्यापक होने से सदा अवतरित है, उसे अवतार की न आवश्यकता है और न वह अवतार ले सकता है'

● मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर का अवतार होता है या नहीं? विचारणीय प्रश्न है। हमारे पौराणिक बन्धु जो स्वयं को सनातन धर्मी कहते हैं ईश्वर का अवतार होना मानते हैं और राम, कृष्ण आदि अनेक महापुरूषों को ईश्वर का अवतार ही नहीं मानते अपितु उनकी मूर्तियाँ बनाकर उन्हें पौराणिक विधि व रीति से पूजते भी हैं। पहली बात तो यह कि ईश्वर का अवतार ही विवादास्पद है, फिर बिना किसी प्रमाण व प्रबल तर्क व युक्ति के उन ऐतिहासिक महापुरूषों की मूर्ति बना कर पूजा करना आज के वैज्ञानिक युग में उचित नहीं ठहरता क्योंकि मूर्ति के गुण उस सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान के गुणों के सर्वथा विपरीत हैं। आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित ऐसा संगठन है जो वेदों को तर्क व ज्ञान, बुद्धि व युक्ति की कसौटी पर खरा उतरने के कारण ईश्वर से प्राप्त सत्य ज्ञान की पुस्तकें मानता है। वैदिक ज्ञान एवं युक्ति व प्रमाणों से आर्य समाज ईश्वर के अवतार की मान्यता को कपोल कल्पित, अज्ञानता व पाखण्ड तथा अन्धविश्वास मानता है तथा अपनी मान्यताओं व कथ्यों को वेदों से सिद्ध भी करता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल 1825–1883 में पौराणिक मतावलम्बियों से मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ किये परन्तु हमारे पौराणिक भाई अपनी मूर्तिपूजा व अवतारवाद आदि अवैदिक मान्यताओं को वेद विहित या युक्ति आदि प्रमाणों से सत्य सिद्ध नहीं कर सके। जब विगत 145 वर्षों से सिद्ध नहीं कर सके तो भविष्य में भी सिद्ध नहीं कर सकते जिसका कारण झूठ के पैर न होना है। झूठ को विद्वानों से स्वीकार नहीं कराया जा सकता। इसे तो अन्धी श्रद्धा से पूर्ण तथा ज्ञान के नेत्रों से हीन व्यक्तियों द्वारा ही स्वीकार कराया जा सकता है।

विचार करने पर सनातन मत कहलाने वाले बन्धु व सनातन वैदिक धर्मी आर्य समाजी भी ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी स्वरूप वाला होना स्वीकार करते हैं। इसका अर्थ हुआ कि वह इस ब्रहमाण्ड में सब जगहों व स्थानों पर, यहाँ तक कि हमारी जीवात्मा के भीतर भी सृष्टिकर्त्ता ईश्वर व्यापक है। जब वह आकाश, पाताल, धरती–आकाश व संसार के कण–कण में सब जगह सब समय में पहले से ही मौजूद व उपस्थित है तो फिर वह मनुष्य रूप धारण करता है, यह मानना अज्ञानता पूर्ण ही कहा जा सकता है। जब वह ईश्वर इस ब्रहमाण्ड का निर्माण, इसका संचालन व प्राणियों के भीतर निरन्तर शुभ प्ररेणायें दे रहा है तो फिर उसे अवतार लेने की आवश्यकता को मानना अपनी अज्ञानता को सिद्ध करने के साथ ईश्वर के स्वरूप को भली प्रकार से न समझना ही कहा जा सकता है।

कहा जाता है कि दुष्टों के दमन के लिए ईश्वर अवतार लेता है। उदाहरण के रूप में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम को लिया जाता और कहा जाता है कि रावण के वध के लिए ईश्वर को अर्थात् राम को अवतार लेना पड़ा। अब यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या ईश्वर बिना अवतार लिए रावण को मार सकता था या नहीं? यदि नहीं मार सकता था तो यह तर्क स्वीकार किया जा सकता है आइए, इस तर्क की पड़ताल करते हैं। इस ब्रहमाण्ड को बने हुए 1.96 अरब वर्ष हो चुके हैं। इस अवधि में गणनातीत या असंख्य मनुष्य आदि उत्पन्न हुए व मरे भी। क्या वह बिना ईश्वर के अप्रत्यक्ष व परोक्ष प्रेरणा व मर्जी से मर गये या वे सब ईश्वर की प्रेरणा से कि जन्म का कारण ईश्वर है। जब सब प्राणियों के जन्म का कारण ईश्वर का निराकार व अजन्मा व अनावतार स्वरूप है तो रावण हो या राम, कृष्ण जी हों या अर्जुन, युधिष्ठिर, कंस या दुर्योधन आदि, सबकी मृत्यु का कारण निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी ईश्वर ही सिद्ध होता है। रावण जैसे या रावण से भी बलवान, दुष्ट और अन्यायकारी मनुष्य व राक्षस के लिए ईश्वर के लिए अवतार की कोई आवश्यकता नहीं है। आजकल रोज बड़े–बड़े आतंकवादी और धर्मात्मा भी मर रहे हैं, उन्हें किसी अवतार द्वारा नहीं अपितु निराकार ईश्वर द्वारा ही अनवतार स्वरूप से धराशायी किया जा रहा है। वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह केवल संकल्प से ही इस सारे संसार को बनाता व चलाता है तो इस महद कार्य की तुलना में रावण आदि अन्यायकारियों को मारना तो अति तुच्छ कार्य है, अतः अवतार वाद की कल्पना व मान्यता तर्क, युक्ति व शास्त्रीय प्रमाणों से हीन होने के कारण असिद्ध, पाखण्ड एवं अन्ध विश्वास ही है।

ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी तथा सर्वशक्तिमान है, अतः उसे किसी भी छोटे या बड़े प्राणी को मारने के लिए अवतार लेने के लिए अवतार की कदापि आवश्यकता नहीं है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि रावण, कंस व दुर्योधन ने जो बुरे कार्य किए, वह अपनी जवानी या बाद के वर्षों में किये थे जबकि मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण जी का जन्म अन्यायकारियों व दुष्टों का वध करने से लगभग 25 से 80 वर्ष पूर्व हो चुका था। इस प्रसंग में श्री रामचन्द्र जी का उदाहरण ले सकते हैं जिन्होंने रावण का जब युद्ध हुआ, उस समय राम निःसन्तान थे और रावण का पुत्र इन्द्रजीत या मेघनाथ प्रसिद्ध है। अतः राम व रावण की आयु में लगभग 25 से 40 वर्ष तक का अन्तर तो रहा ही है। राम ने रावण से युद्ध को टालने के लिए सभी सम्भव प्रयास किए। पहले हनुमान जी लंका गए और उसके बाद बाली के पुत्र अंगद को रावण को समझाने व सीता जी को लौटाने के लिए प्रयास करने के लिए भेजा गया जिससे कि अनावश्यक युद्ध को टाला जा सके। जब यह सम्भव न हुआ तो युद्ध हुआ जिसका परिणाम रावण का वध हुआ। इस घटना से पता चलता है कि यह घटना राम के जन्म व अवतार लेने के 25 से 40 वर्ष बाद घटी थी। **इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि रावण के बुरे कर्मों से लगभग 25 से 40 वर्ष पूर्व ही ईश्वर अर्थात् श्री राम ने रावण को मारने के लिए अवतार ले लिया था जबकि उसकी कोई आवश्यकता थी ही नहीं। ऐसा मानना बुद्धसंगत नहीं है और इससे यह सिद्ध होता है कि राम ईश्वर के अवतार नहीं थे।** ईश्वर का रामचन्द्र जी के रूप अवतार लेना तब उचित होता जब यह निश्चित होता कि इस दुष्ट रावण का वध करना आवश्यक व अपरिहार्य है और वह बिना अवतार के नहीं हो सकता था। यह स्थिति तो सीता हरण के बाद अंगद के प्रस्ताव को ठुकरा देने पर उत्पन्न हुई थी। इससे 25–40 वर्ष पूर्व ही श्री राम चन्द्र जी का जन्म हो चुका था जिसे अवतार कदापि नहीं कहा जा सकता। **अब यदि राम अवतार थे और उन्होंने अपने अवतार लेने के उद्देश्य को रावण को मार कर पूरा कर लिया था तो फिर वह अनेक वर्षों तक जीवित क्यों रहे? उद्देश्य व काम पूरा कर लेने के बाद वर्षों तक वही जमें रहना औचित्य पूर्ण नहीं माना जा सकता।** क्यों नहीं उन्होंने सीता जी सहित कौशल्या आदि माताओं व लक्ष्मण सहित अपने सभी भाइयों को अपने ईश्वर का अवतार होने की बात कह कर अपने मूल निराकार व सर्वव्यापक स्वरूप को धारण कर लिया? उसके बाद वह अनेक वर्षों तक जीवित रहे और वैदिक वयवस्था के अनुसार राज्य किया। इन सबको जानने व समझने पर सर्वव्यापक सत्ता ईश्वर का श्री रामचन्द्र जी के रूप में अवतार लेना असत्य सिद्ध होता है। यही स्थिति योगेश्वर श्री कृष्ण जी व अन्य अवतारों के जीवन व कार्यों पर विचार करने पर भी सामने आती है।। अतः ईश्वर का अवतार नहीं होता और न ही हमारे आदर्श व आदरास्पद श्री राम व श्री कृष्ण ईश्वर के अवतार थे। हाँ यह अपने समय के महापुरुष थे जैसे कि 19वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती हो गये हैं जिन्होंने वेदों व श्री राम तथा श्री कृष्ण की संस्कृति व विरासत का पोषण किया, उसे पुनर्जीवित, पल्लवित व पोषित किया।

वेदादि शास्त्रों में ईश्वर को अजन्मा व अमर कहा है। अजन्मा व्यक्ति जन्म नहीं लेता और लेगा तो यह उसके स्वाभाविक गुण के विपरीत होगा जिससे उसकी सत्ता पर ही प्रश्न चिह्न लग जायेगा? सर्वशक्तिमान सत्ता का धनी ईश्वर अपने संकल्प मात्र से जो करना होता है, करता है। बड़े से बड़ा आततायी, दुष्ट, अन्यायी का अन्त करना बिना अवतार के ही उसके लिए अति सरल व सम्भव है। उसने अपने बारे में मनुष्यों को जानने योग्य पूर्ण ज्ञान वेदों में दे दिया है। ज्ञानी लोग वेद से और अल्प ज्ञानी लोग वेदों के अनुकूल व अनुरूप वैदिक साहित्य से ईश्वर के बारे आवश्यकतानुसार जान कर अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं। हमें लगता है कि यह कहना कि ईश्वर अवतार लेता है या ईश्वर ने कभी अवतार लिया था, उसको एक प्रकार से अपमानित करना है। इसलिए कि वह वो कार्य जो अवतार ने कर करता है अन्यथा नहीं कर सकता, इससे उसकी सर्वशक्तिमत्ता का गुण लांछित होता है। हम आशा करते हैं कि प्रबुद्ध पाठक हमारे विचारों से पूर्ण रूप से सहमत होंगे। इस लेख से यह ज्ञात होता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व योगेश्वर श्री कृष्ण अपने समय के महान पुरुष थे। इन्हें गुणों की खान, ऐश्वर्यशाली व महिमावान होने के कारण भगवान तो कहा जा सकता है परन्तु वह सर्वव्यापक ईश्वर से भिन्न एक सत्ता, ''जीवात्मा'' ही थे। यह बात वेदादि सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय विज्ञान तर्क बुद्धि विवेक व स्वार्थहीन होकर ही जानी जा सकती है।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

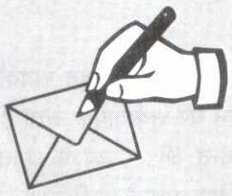

पत्र/कविता

वेद साहित्य के प्रचार का संकल्प लें

वेद परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। वेद का प्रचार का दासित्व सनातनियों और आर्य समाज का कर्त्तव्य है। सनातनियों ने वेद को तिलाञ्जलि दे दी है। इनके विद्वान् तो गीता, रामचरितमानस और भागवतादि पुराणों की कथा में लगे हुए हैं। वेद-प्रवचनों के लिए उनके यहाँ कोई अवकाश नहीं है। वे वेद मानते अवश्य हैं, परन्तु उनका पाठमात्र भी नहीं करते।

आर्य समाज में ''वेद की ज्योति जलती रहेगी'' के नारे तो खूब लगते हैं, परन्तु अधिकांश घरों में वेद नहीं हैं। जहाँ हैं, वहाँ भी प्रायः शोभा के लिये रखें हैं, पठन-पाठन नहीं होता।

हमारी उदासीनता के कारण हम आज तक चारों वेदों का प्रामाणिक भाष्य तैयार नहीं करा पाये। आर्यसमाज की बड़ी-बड़ी सभाओं का इस ओर ध्यान नहीं है। आर्य समाज के मन्त्री और प्रधानों का ध्यान इस ओर है कि आर्य समाजों में बारात घर खोले जाएँ, स्कूल खोले जाएँ, औषधालय खोले जाएँ, बर्तन और बिस्तर रखकर किराये पर दिये जाएँ, सिलाई के केन्द्र खोले जाए, सामग्री कूट-पीस कर बेची जाए, मसाले बेचे जाएँ। समाज में आजकल ऐसे भी अधिकारी हैं जिन्हें वैदिक सिद्धान्तों का कोई ज्ञान नहीं है, वेद का ''क-ख'' नहीं आता।

स्कूल और औषधालय तो ईसाई, मुसलमान, कबीरपन्थी, नानकपन्थी, दादूपन्थी, मलूकदासी गरीबदासी-ये सभी खोल लेगें, परन्तु वेद प्रचार कौन करेगा? आर्य समाज को अपनी 70% शक्ति वेद के प्रचार में लगानी चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज में वेद विद्यालय खोलना चाहिए, चाहे उसमें पढ़ने वाले पाँच ही हों, परन्तु वेद विद्यालय नियमित चलना चाहिए।

गुरूवर्य स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने आज से लगभग 55 वर्ष पूर्व लिखा था।

''वेद का प्रचार कौन करें! सनातनी और आर्यसमाजी दो दल वेद-प्रचार का ठेकेदार अपने को बताते हैं, किन्तु दोनों को पारस्परिक आन्तरिक झगड़ो से फुरसत नहीं, और दुर्भाग्य से दोनों दलों के जो नेता कहलातें हैं, वे वेद की भाषा तो क्या, अधिकतर अक्षरों तक से अनभिज्ञ हैं। वेद न पढ़ने के कारण वे मनमानी चलाते हैं। वैयक्तिक और सामूहिक क्रियाभेद के ढोंग सामने रखकर अपने-अपने दलों का नैतिक तथा आत्मिक पतन कर रहे हैं। आर्य सामाजिक लोग इन दोनों में से अधिक उपालम्भ के पात्र हैं, क्योंकि इनका तो परम धर्म ऋषि ने ''वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना'' निश्चित किया है, किन्तु इनकी गति इतनी मन्द एवं शोचनीय है। कि इनकी सभाओं की तो बात दूर रही, बड़ी-बड़ी संस्थाओं के गुरुकुल-आदिकों के प्रमुख आचार्य आदि लोग है जो प्रायः वेदभाषा से सर्वथा कोरे हैं। इससे वेद-प्रचार की दीन अवस्था का अनुमान सहज में हो सकता है। संस्थाओं पर लाखों का व्यय करने वाले ये आर्य वेद-प्रचार के लिये हजार, दो हजार की राशि भी नहीं निकाल सकते। चाहिए था आजतक कम-से-कम भारत की मुख्य-मुख्य भाषाओं में वेद के प्रामाणिक अनुवाद छप जाते, किन्तु अवस्था यह है कि ऋषिकृत भाष्य भी शुद्ध नहीं छापा गया। अपने-अपने दलों और मठों की भट्टी में और दूसरे दल की निन्दा तथा अपवाद में सारी शक्ति व्यय कर दी जाती है। वेद प्रचार कौन करे?''

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना दो बातों के लिए की थी- 1. योग का प्रचार और 2. वेद का प्रचार। योग में हम शून्य हैं। वेद प्रचार में हमने बहुत स्वल्प कार्य नही किया है। क्या केवल हिन्दी में ही वेद भाष्य छापकर सारें संसार में वेद का डंका बजाया जा सकता है।? सर्वथा असम्भव। वेद के प्रचार के लिए दस-बीस विद्वानों को बैठाकर वेद भाष्य कराया जाए। महर्षि दयानन्द के भाष्य को टीका-टिप्पिणियों के साथ मुहावरेदार ओर ललित भाषा में प्रस्तुत किया जाए भारत की पन्द्रह भाषाओं में और विश्व की कम-से कम अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रशियन, स्पैनिश, डच, चीनी और जापानी-इतनी भाषाओं में वेद छपें ही।

रघुनन्दन प्रसाद आर्य
आर्य समाज, सरदार पटेल मार्ग,
खलासी लाईन, सहारनपुर

****

वेदों के पथ पर चलो

जगत गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
देश भक्त धर्मात्मा, वेदों के विद्वान।।
वेदों के विद्वान, सत्यवादी तपधारी।
मानवता के पुंज, साहसी अरु ब्रह्मचारी।।
किया वेद प्रचार, न कष्टों में घबराए।
दुखिया दीन अनाथ, हर्ष से गले लगाए।।

अंग्रेजों का राज्य था, भारत था परतंत्र।
दुष्ट विधर्मी लोग नित, रचते थे षडयंत्र।।
रचते थे षडयंत्र, दुखी थी जनता भारी।
लाखों गऊएं यहां, नित्य जाती थी मारी।।
विधवाओं का करुन-क्रन्दन चहुं ओर था।
दानव दल का यहां, सुनो तब बहुत जोर था।।

स्वामी जी ने गरजकर, कहा सुनो धर ध्यान।
बंधों संगठन सूत्र में यदि चाहो कल्याण।।
यदि चाहो कल्याण, सभी मिल कदम बढ़ाओ।
पापी है अंग्रेज खलों को मार भगाओ।
गऊ गुणों की खान करो गऊओं की सेवा।
जाति-पति दो मिटा, मिलेगी पावन मेवा।।

नारी की पूजा करो, सच्ची देवी मान।
नर्क वहां होता जहां, नारी का अपमान।।
नारी का अपमान, करें वे दुख पाते हैं।
हो जाता है पतन, अनाड़ी पछताते है।।
रहता देश गुलाम , अगर ऋषि यहां न आते
ऋषियों के सुत-सुता, कभी भी सुख ना पाते।।

दीवाली है दे रही, हमें आज सन्देश।
जुटो वेद प्रचार में, तजो ईर्ष्या द्वेश।।
तजो ईर्ष्या-द्वेश जगत् में नाम कमाओ।
बनकर श्रद्धानन्द, शुद्धि का चक्र चलाओ।।
लेखराम, गुरुदत्त बनो, निज धर्म निभाओ।
स्वयं आर्य बनो, विश्व को आर्य बनाओ।।

पं नन्दलाल निर्भय पत्रकार भजनोपदेशक
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चल भाष क्रमांक 9813845774

thearyasamaj.org

कैन्सर का ज्ञान प्राचीन काल में भी था

● डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

ऐसा नहीं कि कैन्सर आज की कोई नई व्याधि है प्राचीन काल में भी कैन्सर का पूरा ज्ञान था आज यह व्याधि भयावह रूप धारण कर रही है। इसकी वृद्धि तीव्र गति से हो रही है प्राचीन काल में इतनी वृद्धि नहीं थी। इसका वर्णन चरक सुश्रुत आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी वितृत रूप से है। कैन्सर नाम आर्याचीन है प्राचीन ग्रन्थों में इसका वर्णन अर्बुद व कर्कटार्बुद के नाम से विस्त्रत रुप से है सुश्रुत निदान स्थान के ग्यारहवें अध्याय में अर्बुद के विषय में वर्णन है–

गात्र प्रदेशे क्वाचित देव दोषाः संमूर्छित मासम अभिप्रदूष्य।

व्रत स्थिर मन्द रुजे महाजय नल्प भूल्म चिर व्रद्ध चपाकम

कुर्वन्ति मांसोप चयम तु शोकं तवार्बुद विदो वदन्ति।''

मानव देह के किसी भी भाग में वातादि दोष कुपित होकर मांस एवं रक्त को दूषित कर स्थायी अल्प पीड़ा युक्त बड़ा चौड़े मुँह वाला, वर्षों में धीरे–धीरे बढ़ने वाला, कदापि न पकने वाला, गहरे मूल वाला, शोथयुक्त मांस पिण्ड कर देता हूँ। इसी को विद्वान 'अर्बुद' कहते हैं।

कैन्सर लैटिन भाषा का शब्द है जिसका शब्दार्थ 'केकड़ा' होता है केकड़ा जिस प्रकार बीच में उमरा हुआ पृष्ठ वाला ऊपर से उभरी हुई शिराएँ तथा पंजों वाला होता है। आयुर्वेद में अर्बुद का ही एक वर्ग कर्कटार्बुद है यह प्राण घातक रोग है। कैन्सर भिन्न–भिन्न राष्ट्रों में आर्थिक, सामाजिक, अनुवांशीक, देश, काल के अनुसार आहार विहार में वहाँ की परिस्थितियों के अनुसार पृथक–पृथक होता है।

आस्ट्रेलिया में सूर्य की तीव्र किरणों से त्वचा का कैन्सर, आयर लैण्ड में बड़ी आंत का कैन्सर, मिस्र में मूत्राशय का कैन्सर, जापान भारत अमेरिका, यूरोप में कुफ्फुस कैन्सर प्रचुरता से होता है कश्मीर निवासी सर्दी ऋतु में आग की केरचि सीने से लगाये रहते हैं इससे वहां फुफ्फुस व छाती का कैन्सर हो जाता है। कैन्सर के विषय में अनेक वैज्ञानिकों की राय भिन्न है आयुर्वेद में इसका वर्णन विशेष वैज्ञानिक रूप से वर्गीकृत किया गया है।

कैन्सर के विषय में प्राचीन ऋषि महर्षियों को पूरा ज्ञान था तथा आज की रेडिसोथिरेपी की भाँति अग्नि दग्ध चिकित्सा का वर्णन भी प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है ऋग्वेद में वर्णन है

विषेण भंगुरावतः प्रतिष्म रक्षसो दहः।
अग्ने तिग्मेन शोयिषा तपुरग्रामि ऋषिभिः।।
ऋ 10.56:23

मंत्र में वैद्य के लिए प्रकाया किया है कि वैद्य महोदय अग्नि दग्ध चिकित्सा जिसका आधुनिक स्वरुप रेडियोथिरेपी है का प्रयोग करते हैं अर्बुद कैन्सर के लिए प्रयोग किया गया है ऐसे ही

विद्रधस्य बलासस्य लो हितस्य वनस्पतये।
विसलय कस्पौषधे मोच्छिसः पिशितंचन।।
अथर्व 6:126:1

अथर्ववेद में अर्बुद अर्थात् कैन्सर का निदान चिकित्सा उपचार आदि सम्पूर्ण वर्णन है कैन्सर का विद्रधि के रूप में भी उल्लेख मिलता है।

ग्रन्थि अर्बुदानां च यतोऽविशेषः प्रदेश हेत्वाकृति दोष दूष्यैः।
ततश्चिकित्सेदिषगर्बुदानि विधान विद्रग्रन्थि चिकित्सितेन।।
चरक संहिता चिकित्सा 11:56

श्लोक में चरक ऋषि द्वारा अर्बुद (कैन्सर) की चिकित्सा ग्रन्थि की भाँति करने का निर्देश दिया है।

चरक सुश्रुत आदि में कैन्सर को व्रणशोष के नाम से भी जाना जाता था क्योंकि यह रोग शरीर के रसों का शोषण कर लेता है इसे असाध्य रोग माना जाता था।

संशोषणाद्रसदीनां शोष इत्यादि धीपते।
व्रणितस्य भवेद शोषः सच अजाध्यत्मः स्मृतं।। चरक

अर्बुद जिससे कर्कटार्बुद भी कहते हैं अनेक प्रकार के बताए हैं दोष दूष्यानुसार बात पित्त कफ रक्त मासं भेद सन्निपात भेद से सात प्रकार के, प्रभाव भेद से मृदु व दारुण, संख्या भेद से एक द्वि व अध्यर्बुद, साध्य असाहय भेद से दो प्रकार के होते हैं।

आयुर्वेद में लक्षणों को देखकर रोग की पहचान की जाती थी।

1. मुख, जिह्वा, कपोल, ओष्ठ, गला, इन पर हुए घाव का न भरना
2. स्तन, ओष्ठ, जिह्वा व किसी अंग पर ग्रन्थि का नमन उसकी वृद्धि होना तथा मोटाई का बढ़ना
3. असामान्य रुप से रक्त व मवाद का निकलना
4. विबन्ध का लगातार रहना
5. योनि, मूत्र व मल मार्ग से रक्त, मल, मूत्र व मवाद की अति स्रव्त्ति
6. त्वचा पर स्थित तिल मस्सें के वर्ण आकार में परिवर्तन होना
7. गले में लगातार खराश, कास, स्वर भेद व गला बैठना
8. निगलने में कठिनाई
9. आन्त्र क्रिया में परिवर्तन
10. गले में लम्बे समय से घाव
11. अधिक समय तक अजीर्ण, उत्क्लेश वमन होगा
12. मुख से कफ के साथ रक्त आना
13. भार में कमी होना
14. स्त्रियों में रजोनिवृत्ति के बाद भी रक्त स्राव होना
15. फुफ्फुस अर्बुद में श्वास कष्ट

आधुनिक काल में कैन्सर का निदान लाक्षणिक बायोप्सी, एक्स रे, रेडियो आइओटोप, एन्डोस्कोपी, रक्त परीक्षण, वायो केमिकल परीक्षा, सीटीस्केन, एम आरआई, पीईटी आदि द्वारा करते हैं।

आयुर्वेद में इस व्याधि की चिकित्सा का बहुत रुप से वर्णन है। पंच कर्म, आम दोष पाचन, संशमन आदि औषध चिकित्सा द्वारा करते है।

प्राचीन काल में रसौषधि, काष्ठौषधि, अग्निदग्ध एवं शल्य चिकित्सा की जाती थी मल्लातक, कष्ट करज्म, सदाबहार, रक्तपुष्पा, मञ्जिष्ठा आरग्वध, वनककड़ी, कासमर्द, अरिष्टक, निशोथ दण्तीभूल कचनार जैसी अनेक सहस्रों औषधियों से चिकित्सा की जाती थी सुश्रुत संहिता में जलौकावचाराण, रक्तमोक्षण, तुम्बी लगाना, अग्निकर्म, क्षार प्रयोग, शस्त्र प्रयोग, पंच कर्म आदि का भी वर्णन है।

कैन्सर रोग से बचने के उपाय चिकित्सा निदान संप्राप्ति आदि विषयों पर अनेक वैद्यों ऋषियों विद्वानों द्वारा अनेक ग्रन्थ लिखे गए है जिनका आज आधुनिक वैज्ञानिक साधनों के द्वारा शोध व परीक्षण कर विश्व के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

पृथ्वी पर पाई जाने वाली प्रत्येक वनस्पति व अन्य औषधि ही है इस ईश्वर प्रदत्त अथाह सागर का प्रयोग निरीक्षण व परीक्षण कर इस क्षेत्र में प्रयोग करना चाहिए आयुर्वेद पूर्ण चिकित्सा पद्धति है इसमें आधुनिक विज्ञान का प्रयोग कर कैन्सर से मुक्ति मिल सकती है।

गली नं.2 चन्द्र लोक कालोनी खुर्जा

डी.ए.वी. (एडवर्ड गंज) स्कूल मलोट में मनाया गया पर्यावरण महोत्सव

डी.ए.वी. एडवर्ड गंज सी.सै. पब्लिक स्कूल मलोट द्वारा अपने वातावरण शुद्ध व स्वच्छ बनाने के लिए पर्यावरण वनमहोत्सव सप्ताह मनाया गया। पूरा सप्ताह भर अनेक प्रतियोगितायें एवं अन्य गतिविधियां करवाई गईं। इन गतिविधियों में कविता उच्चारण प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, आशु भाषण एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता, पर्यावरण से सम्बन्धित हिन्दी व पंजाबी में नारे लेखन प्रतियोगिता, हरे–भरे वातावरण से सम्बन्धित प्रतियोगिता और गायन आदि प्रतियोगिताएं करवाई गईं। विद्यार्थियों ने बढ़–चढकर हिस्सा लिया और अपने वातावरण को स्वच्छ व सुरम्य बनाने का व्रत लिया।

पर्यावरण सप्ताह के अन्तिम दिन एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के चैयरमेन श्री कृष्ण कुमार छाबडा ने की।

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री जी.सी.शर्मा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए और उसकी तब तक देखभाल करनी चाहिए जब तक वह बड़ा न हो जाए। इस अवसर पर विद्यालय में 50 पौधे भी लगाए गए।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 26-27/11/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. कॉलेज फिरोज़पुर ने महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोजपुर कैंट में प्रिंसिपल डॉ. पुष्पिंदर वालिया की अध्यक्षता में आर्य जगत् के महान् कर्मठ योद्धा, सत्य निष्ठ, मानव कल्याण के शुभचिन्तक तथा वेदों के मर्मज्ञ विद्वान महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्म दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री मनमोहन शास्त्री ने वैदिक मंत्रोच्चारण से यज्ञ सम्पन्न किया। प्रिंसिपल डॉ. वालिया ने यज्ञ में उपस्थित समस्त छात्राओं को महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि महात्मा जी ने अपना पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में अर्पित कर दिया। उनकी कथनी और करनी प्रेरणात्मक थी। डॉ. वालिया ने छात्राओं को माहात्मा आनन्द स्वामी जी के बहुमूल्य विचारों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि महात्मा जी का जीवन अनुकरण करने के लिए अपने आप में एक उदाहरण है। इस यज्ञ में स्थानीय समिति से पंडित सतीश शर्मा, श्रीमती स्वर्ण चावला, डी.ए.वी. कॉलेज का समस्त स्टाफ व छात्राएं शामिल हुई। शान्तिपाठ से यज्ञ सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ।

जम्मू कश्मीर में आई बाढ़ के कहर से प्रभावित लोगों को सहायता

बाबा बीरम दास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल द्वारा जम्मू कश्मीर में आई बाढ़ के कहर से प्रभावित लोगों के लिए विद्यालय आर्य युवा समाज व दैनिक भास्कर की मुहिम के साथ एकत्रित किये गए बहुत सारे गर्म कपड़े दो बार उनकी सहायतार्थ भेजे गए हैं।

स्कूल के प्रधानाचार्य श्री पंकज कौशिक के आह्वान पर विद्यार्थियों ने इस मुहिम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रधानाचार्य ने कहा कि इस तरह के कार्य करने से समाज की सेवा तो होती ही है साथ ही साथ बच्चों में सहयोग की भावना भी बलवती होती है। इस अवसर पर उन्होंने सभी दानी अभिभावकों को धन्यवाद दिया।

एकत्रित किया गया सारा समान दैनिक भास्कर आफिस लीला भवन के सुपुर्द किया गया जिससे कि वह जरूरतमंदों तक समय पहुँच सके।

विद्यालय प्रबन्धक श्री सेवाराम प्रभाकर जी ने इस कार्य में सभी नागरिकों से बढ़–चढ कर भाग लेने का अनुरोध किया। जिससे कि जरूरतमंदों को भी मुस्कराने का अवसर मिल सके। आर्य युवा समाज चनारथल खुर्द की ओर से किए जा रहे कार्यों में जम्मू कश्मीर के जरूरतमंदों के लिए भेजे गर्म कपड़े एक है।

डी.ए.वी. नोएडा में महात्मा आनन्द स्वामी जन्मोत्सव समारोह

आर्य समाज डी.ए.वी. स्कूल नोएडा में गत सप्ताह महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्मोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर विद्यालय में आर्य समाज द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए गए।

विद्यालय के सभागार में गायत्री–मंत्रोच्चारण के साथ ही कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सीनियर विंग के छात्रों ने आनंद स्वामी जी के बाल्य–जीवन के घटना–चक्र को मंच पर लघु–नाटिका के जरिए प्रदर्शित किया, कि किस प्रकार बचपन के खुशहाल चंद, गायत्री–मंत्र का जाप करते हुए आर्य समाज के प्रचार–कार्यो से जुड़े और आजीवन उसी में संलग्न रहे।

इस अवसर पर समूह–गीत गायन भी हुआ।

जूनियर छात्रों ने भी मधुर स्वर में भजन–प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे–

इस पावन अवसर पर जम्मू कशमीर के पीडितों के लिए भी राहत समाग्री भेजी गई।

नोएडा स्थित शंकरा स्कूल के विशेष बच्चों के लिए भी विद्यालय के छात्रों ने बहुत से उपहार उन्हें भेंट में दिए और उन सभी के जीवन में भी खुशियों का दीया जलाने का प्रयास किया। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या श्रीमती आई.पी. भाटिया जी ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी जी ने अपना जीवन आर्य–समाज को समर्पित किया। हमें उनके जीवन से स्वाध्याय, स्वच्छता और सत्संग के गुणों को ग्रहण करना चाहिए। अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करो, स्वयं को पहचानो और श्रेष्जनों का संग पकड़ो, तभी जीवन में सच्चा सुख पा सकते है।

दूसरे दिन यज्ञ–हवन का आयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भी हिस्सा लिया।

योगासन–प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। अभिभावको ने बड़े ही उत्साह के साथ इस सत्र में भाग लिया।

इस योगासन–सत्र में अभिभावकों ने जाना कि योगासन कब और कैसे किए जाएँ जिससे वे उनका पूरा लाभ उठा सकें। सांयकाल विद्यालय के एम.पी. हॉल में 'भजन–संध्या' का आयोजन किया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में अभिभावक भी उपस्थित थे।

मुद्रक व प्रकाशक – एस.के.शर्मा, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी